सांध्य दैनिक

4PM

सफलता की खुशी मनाना अच्छा है पर उससे जरूरी है अपनी असफलता से सीख लेना।

-बिल गेट्स

मूल्य ₹ 3/-

जिद...सच की

www.4pm.co.in www.facebook.com/4pmnewsnetwork @Editor_SanjayS YouTube @4pm NEWS NETWORK

● वर्ष: 11 ● अंक: 243 पृष्ठ: 8 ● लखनऊ, शुक्रवार 10 अक्टूबर, 2025

दक्षिण अफ्रीका ने रोका भारत का विजय... 7 | तमिलनाडु में सियासी बदलाव के... 3 | बसपा ने भाजपा के साथ गुप्त... 2

चिराग-पीके का राजनीतिक बाटी चोखा! एनडीए को झटका

17 अक्टूबर तक भरे जाएंगे नामांकन

» बिहार विधानसभा चुनाव पहले चरण की सीटों के लिए नोटिफिकेशन जारी

» एनडीए में माथापच्ची जारी वहीं इंडिया गठबंधन ने अंदरखाने में तय कर लिया सीट शेयरिंग फार्मूला

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। चुनाव आयोग ने बिहार विधानसभा चुनाव के पहले चरण कि सीटों के लिए अधिसूचना जारी कर दी है। बिहार में 17 अक्टूबर तक नामांकन का पहला दौर चलेगा। बिहार विधानसभा चुनाव के पहले चरण में 18 जिलों की 121 विधानसभा सीटों के लिए 6 नवंबर को मतदान होना है।

नामांकन की अंतिम तारीख 17 अक्टूबर है और नामांकन पत्रों की जांच 18 अक्टूबर को होगी। 20 अक्टूबर तक नाम वापस लिए जा सकेंगे। पहले चरण में चुनाव लड़ने के इच्छुक उम्मीदवारों को नामांकन के लिए केवल छह दिन का ही समय बचा है। 11 अक्टूबर को दूसरा शनिवार और 12 अक्टूबर को रविवार होने के कारण अवकाश है जिसकी वजह से दो दिन नामांकन दाखिल नहीं हो सकेंगे।

उपेन्द्र कुशवाहा एनडीए की चटनी मिक्सर मशीन

बाटी चोखा बिना चटनी के स्वाद नहीं देता इसलिए चिराग–पीके चाहते हैं कि चटनी का काम उपेन्द्र कुशवाहा करें और पूरी राजनीतिक डिश का स्वाद बदल दें। एनडीए की ओर से उपेन्द्र कुशवाहा को मैदान में उतारा जाना तय किया जा चुका है। यह वही नेता हैं जो सामाजिक समीकरणों को ग्राइंड करने में माहिर माने जाते हैं। ओबीसी और अन्य पिछड़ा वोट बैंक में इनकी पकड़ मजबूत है और भाजपा-जेडीयू दोनों ही इन्हें अपनी गुप्त रेसिपी में मिलाना चाहते हैं। लेकिन खेल यही है कि उपेन्द्र कुशवाह किस बर्तन में अपना स्वाद डालेंगे? क्योंकि बिहार की राजनीति में एक बार आपने गलत कड़ाही में चटनी डाल दी, तो पूरा पकवान कड़वा हो जाता है। और आज की स्थिति यह है कि एनडीए का स्वाद लगातार बेस्वाद होता जा रहा है। बिहार में कोइरी जाति को कुशवाहा के नाम से भी जाना जाता है।

अब सिर्फ छह दिन का समय बचा

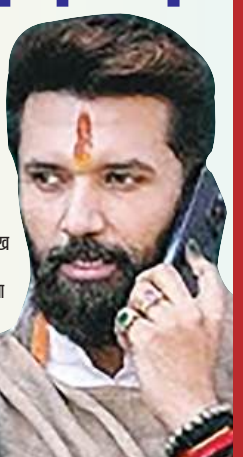

नोटिफिकेशन जारी होने के बाद अब सिर्फ छह दिन का समय शेष बचा है। मगर सत्ताधारी एनडीए गठबंधन के भीतर अभी भी माथापच्ची जारी है। भाजपा और जेडीयू के बीच सीट बंटवारे को लेकर ठंडी जंग चल रही है। नीतीश कुमार की पार्टी चाहती है कि 2020 की तर्ज पर सम्मानजनक सीटें मिलें जबकि भाजपा इस बार खुद को सीनियर पार्टनर के रूप में पेश करना चाहती है। दोनों में अंदरखाने तीखी बहसें जारी हैं और यही वजह है कि अब तक उम्मीदवारों की लिस्ट को अंतिम रूप नहीं दिया जा सका है। उधर, चिराग पासवान और प्रशांत किशोर (पीके) का नया प्रयोग भी एनडीए के समीकरण बिगाड़ सकता है। चिराग ने कई सीटों पर अपनी दावेदारी ठोक दी है जिन पर भाजपा या जेडीयू दोनों नाखुश हैं। भाजपा के एक वरिष्ठ नेता के शब्दों में चिराग को हम सहयोगी मानें या चुनौती यह ही तय नहीं हो पा रहा। इसी असमंजस ने पूरे गठबंधन को भट्टी पर रख दिया है। दूसरी तरफ इंडिया गठबंधन ने अंदरखाने में अपना फार्मूला तय कर लिया है मगर औपचारिक घोषणा अभी बाकी है।

एनडीए में हालात खराब

चिराग-पीके खराब कर रहे है खेल

एनडीए का हाल इन दिनों वैसा ही है जैसे कोई रसोइया एक साथ चार बर्तन चढ़ा दे और हर बर्तन में अलग-अलग आवाज़ें आने लगें। केंद्र से लेकर पटना तक तनाव की बासी गंध तैर रही है। चिराग पासवान जो कभी पीएम मोदी का हनुमान कहलाते थे अब पीके यानी प्रशांत किशोर के साथ राजनीतिक बाटी-चोखा बनाने की फिराक में लगे हैं। राजनीतिक विश्लेषकों का कहना है कि चिराग भाजपा को उसी रेसिपी में पकाने की तैयारी कर रहे हैं जिसमें नीतीश कुमार को उन्होंने 2020 में जलाया था। पीके यानी प्रशांत किशोर इस बार कंसल्टेंट नहीं कुकिंग मास्टर के रोल में हैं। उनका मानना है कि बिहार की राजनीति अब जाति से नहीं जमीनी संगठन और डिजिटल नाड़ी से जीती जाएगी। इसीलिए उन्होंने चिराग के लिए एक यंग बिहार मिशन की रेसिपी तैयार की है जिसमें डाटा का नमक युवाओं का प्याज और नाराज किसानों का तड़का डाला जा रहा है। उधर भाजपा के भीतर भी उबाल है संजय जायसवाल, गिरिराज सिंह, और मंगल पांडे जैसे नेता अंदर ही अंदर सवाल पका रहे हैं कि आखिर नीतीश कुमार के बार-बार लौटने और चिराग के उभार के बीच पार्टी का मूल चेहरा कहां है? मसलन भाजपा के अंदर यह सवाल गूंज रहा है कि क्या हम जेडीयू के भात में बस चटनी हैं या असली चूल्हा हमारे पास है?

पुण्यतिथि पर याद किए गए नेता जी

पिता मुलायम सिंह को अखिलेश ने दी श्रद्धांजलि

» रामगोपाल बोले- जो लोग दिल्ली का रास्ता नहीं जानते थे उन्हें सांसद बनाया

» पीएम मोदी, कांग्रेस अध्यक्ष खरगे समेत दिग्गजों ने अर्पित किए पुष्प

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। समाजवादी पार्टी के संस्थापक मुलायम सिंह यादव की तीसरी पुण्यतिथि पर सैफई स्थित समाधि स्थल पर उन्हें श्रद्धांजलि दी गई। अखिलेश यादव ने परिवार के साथ पुष्प अर्पित किए। समाधि स्थल पर श्रद्धांजलि सभा का आयोजन किया गया, जहां पार्टी कार्यकर्ताओं और नेताओं ने उन्हें नमन किया। वहीं पीएम मोदी, कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे, यूपी के सीएम योगी ने उन्हे पुष्पांजलि अर्पित की। सपा के प्रमुख राष्ट्रीय महासचिव प्रो. रामगोपाल यादव ने मुलायम सिंह को याद करते हुए कहा कि जो लोग दिल्ली का रास्ता नहीं जानते थे उन्हें उन्होंने सांसद बना दिया।

सैफई में बनेगा नेताजी का भव्य स्मारक : अखिलेश यादव

समाजवादी पार्टी प्रमुख अखिलेश यादव ने पूर्व मुख्यमंत्री मुलायम सिंह यादव की तीसरी पुण्यतिथि पर सैफई में उनके सम्मान में एक स्मारक बनाने की घोषणा की। नेताजी (मुलायम सिंह यादव) सभी पार्टी कार्यकर्ताओं को प्रेरित करते रहेंगे और अपने आदर्शों और विचारों के साथ जीवित रहेंगे। मंच पर उपस्थित सभी लोग और हमारे सामने बैठे समाजवादी परिवार के सभी सदस्यों ने राजनीति के हर उतार-चढ़ाव में समाजवादी आंदोलन का साथ दिया है।

पद्म विभूषण' मुलायम सिंह यादव को विनम्र श्रद्धांजलि : योगी

उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने शुक्रवार को समाजवादी पार्टी के संस्थापक मुलायम सिंह यादव को उनकी पुण्यतिथि पर श्रद्धांजलि अर्पित की। आदित्यनाथ ने 'एक्स' पर पोस्ट किया, पूर्व रक्षा मंत्री, उत्तर प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री, 'पद्म विभूषण' मुलायम सिंह यादव की पुण्यतिथि पर उन्हें विनम्र श्रद्धांजलि!

बसपा ने भाजपा के साथ गुप्त समझौता किया : अखिलेश

बोले सपा प्रमुख- पार्टी संरक्षक मुलायम सिंह यादव ने ही कांशीराम को सांसद बनने में मदद की थी

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। समाजवादी पार्टी के अध्यक्ष अखिलेश यादव ने आरोप लगाया कि बहुजन समाज पार्टी (बसपा) ने सत्तारूढ़ भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के साथ गुप्त समझौता किया है और कहा कि मायावती आपसी लाभ के लिए उत्पीड़कों की आभारी हैं। उनकी यह टिप्पणी मायावती द्वारा समाजवादी पार्टी को दोमुँहा कहने के बाद आई है। लखनऊ में श्री यादव ने कहा कि क्योंकि उनकी अंदरूनी मिलीभगत जारी है, इसलिए वे अपने उत्पीड़कों के आभारी हैं।

उन्होंने यह भी कहा कि सपा और पार्टी संरक्षक मुलायम सिंह यादव ने ही कांशीराम को इटावा से सांसद बनने में मदद की थी। इससे पहले दिन में, मायावती ने समाजवादी पार्टी को दोगली करार देते हुए कहा कि यादव की पार्टी दलितों को तभी याद करती है जब उसे उनकी ज़रूरत होती है। बसपा संस्थापक कांशीराम की 19वीं पुण्यतिथि पर आयोजित एक रैली में बोलते हुए, उत्तर प्रदेश की पूर्व मुख्यमंत्री ने यादव की पार्टी पर राज्य में सत्ता में रहते हुए दलित स्मारकों की उपेक्षा करने का भी आरोप लगाया और कहा कि उन्होंने उनके रखरखाव पर एक रुपया भी खर्च नहीं किया।

सपा सरकार के दौरान सभी स्मारकों का उचित रखरखाव किया गया था

अखिलेश यादव ने आगे कहा कि अगर मायावती के अलावा किसी और ने उनकी मूर्ति लगवाई है, तो वह मैं हूँ... सपा सरकार के दौरान सभी स्मारकों का उचित रखरखाव किया गया था। 2012 से 2017 तक उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री रहे यादव ने अपने पीडीए फॉर्मूले (पिछड़े, दलित और अल्पसंख्याक) को भी दोहराया और इसे मज़बूत करने का आह्वान किया। उन्होंने आगे कहा कि सपा को राज्य में लोकतांत्रिक सरकार बनाने और सामाजिक न्याय स्थापित करने के लिए संघर्ष जारी रखना होगा। उन्होंने कहा, अगर हम लोगों से जुड़ते रहेंगे, तो निकट भविष्य में समाजवादी पार्टी और इंडिया गठबंधन सरकार बनाएगा।

यूपी एमएलसी चुनाव के लिए समाजवादी पार्टी ने 5 प्रत्याशी किए तय

अगले साल के आखिरी तिमाही में विधान परिषद की शिक्षक एवं स्नातक निर्वाचन कोटे की 11 सीटों पर होने वाले चुनाव के लिए सपा ने अभी से चेहरे तय करने शुरू कर दिए है। गुरुवार को समाजवादी पार्टी ने लखनऊ सहित पांच सीटों पर उम्मीदवार घोषित कर दिए हैं। लखनऊ स्नातक सीट से सपा ने कांति सिंह को चेहरा बनाया है। उत्तर प्रदेश में इस समय एमएलसी की 11 सीटों पर वोटर लिस्ट के रिवीजन का काम चल रहा है। सभी दलों के संभावित प्रत्याशी और दावेदार अपने समर्थकों को वोटर बनाने और जमीन मजबूत करने में जुटे हैं। सपा ने तैयारी का वक्त देने के लिए अभी से प्रत्याशी घोषित करना शुरू कर दिया है। लखनऊ सीट पर पार्टी ने चेहरा बदला है। पिछले चुनाव में यहां राम सिंह रणा को टिकट दिया था। इस बार प्रतापगढ़ के सांसद एसपी सिंह की पत्नी कांति सिंह को टिकट मिला है। यहां से एमएलसी रह चुकीं कांति पिछली बार निर्दलीय मैदान में उतरी थीं। पार्टी ने गोरखपुर-फैजाबाद की शिक्षक कोटे की सीट पर भी प्रत्याशी बदला है। इस बार अवधेश यादव की जगह एडेड कॉलेज के शिक्षक कमलेश यादव को टिकट दिया गया है। जीती सीटों पर पार्टी ने मौजूदा चेहरों पर फिर दांव लगाया है। वाराणसी-मीरजापुर शिक्षक निर्वाचन क्षेत्र से लाल बिहारी यादव और खंड स्नातक सीट से आशुतोष सिन्हा उम्मीदवार होंगे। वहीं, इलाहाबाद-झांसी स्नातक सीट से मौजूदा एमएलसी मान सिंह पर सपा ने फिर भरोसा जताया है।

मायावती का सीजेआई पर हमले की निंदा न करना अफसोसजनक : संजय

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

अयोध्या। आम आदमी पार्टी से राज्यसभा सांसद संजय सिंह अयोध्या पहुंचे। उन्होंने बताया कि संगम से सरयू तक की पदयात्रा की तिथि में बदलाव किया गया है। अखिलेश यादव और आजम खान की मुलाकात पर उन्होंने कहा कि यह उनका आंतरिक मामला है। इसमें कोई गलत बात नहीं है।

वहीं, मायावती की रैली पर कहा कि कांशीराम की पुण्यतिथि के मौके पर उन्होंने सीजेआई पर हुए हमले की निंदा तक नहीं की। यह दलित समाज के लिए निराशाजनक है। दलित समाज को यह उम्मीद थी कि रैली में कम से कम दो लाइन बोलकर सीजेआई पर हमले की निंदा करेंगी। लेकिन, उन्होंने यह भी उचित नहीं समझा, जो मेरे लिए अफसोस की बात है। अब यह पदयात्रा 12 नवंबर से 24 नवंबर तक आयोजित की जाएगी। बिहार चुनाव में पार्टी के प्रचार अभियान को देखते हुए यह निर्णय लिया गया है।

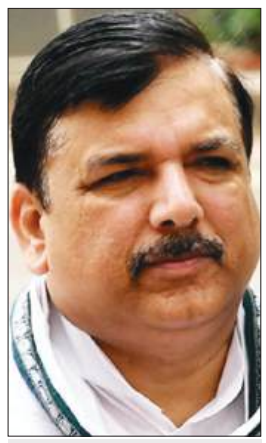

सीजेआई के नाम पर वीडियो चलवा रही है भाजपा व आरएसएस

सुप्रीम कोर्ट के मुख्य न्यायाधीश पर जूता मारने से जुड़े वायरल वीडियो पर संजय सिंह ने कहा कि यह सब भारतीय जनता पार्टी के समर्थकों की ओर से फैलाया जा रहा है। सीजेआई के नाम पर वीडियो बनाकर प्रसारित किया जा रहा है। यह भाजपा व आरएसएस के नेतृत्व से प्रेरित है। देश के दलितों और वंचितों को अब जागृत होना होगा, ताकि बिहार चुनाव में इन ताकतों को मुंहतोड़ जवाब दिया जा सके।

भतीजे आकाश को मिल सकती है बड़ी जिम्मेदारी

» बसपा की रैली में मायावती ने दिए संकेत

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। बिहार चुनाव के बाद आकाश आनंद यूपी की सियासत में फिर सक्रिय हो सकते हैं। बसपा सुप्रीमो मायावती ने पार्टी में आकाश की भूमिका को लेकर तस्वीर साफ करने के साथ यह संकेत भी दिया कि आकाश ही पार्टी का भविष्य हैं। वहीं, आकाश भी रैली के दौरान अपनी बुआ और बसपा सुप्रीमो के साथ परछाई की तरह साथ रहे। अपने संबोधन की शुरुआत और अंत में उन्होंने मायावती के पांव छूकर समर्थकों का दिल जीतने की कोशिश भी की।

बता दें, आकाश ने करीब 8 मिनट के संबोधन के दौरान मायावती की प्रशंसा करने के साथ उन्हें पांचवीं बार मुख्यमंत्री बनाने के लिए समर्थकों में जोश भरने का प्रयास भी किया। उन्होंने कहा कि आज कांशीराम की पुण्यतिथि है। उनके संघर्षों को कभी भुलाया नहीं जा सकता है। उनकी उत्तराधिकारी और मेरी एकमात्र आदर्श बहनजी का भी मैं दिल से आदर सम्मान करता हूं। वह कांशीराम के अधूरे कारवां को पूरा करने में लगी हैं। उनके पदचिन्हों पर चल रही हैं। आज लाखों लोग उन्हें सुनने आए हैं। इस बार आई भीड़ को देखकर कह सकता हूं कि बसपा की पांचवीं बार मायावती के नेतृत्व में अकेले सरकार बनने जा रही है। हमें अपनी पार्टी को केंद्र और राज्य की सत्ता में लाना है। आकाश के संबोधन के दौरान कार्यकर्ताओं और समर्थकों का उत्साह देखने वाला था।

रैली में दिहाड़ी पर नहीं आए लोग : मायावती

मायावती ने अपने संबोधन के दौरान विपक्ष दलों की रैलियों पर सवाल उठाते हुए कहा कि हमने दूसरे दलों की तरह मजदूरी देकर दिहाड़ी पर लोगों को नहीं बुलाया है। लोग खुद चंदा जुटाकर अपनी बहन को सुनने के लिए यहां आए हैं। वहीं अपने भाई आनंद कुमार के लिए कहा कि वह राष्ट्रीय उपाध्यक्ष होने के साथ मेरी गैर-मौजूदगी में दिल्ली में सारा कामकाज संभालते हैं। वहीं अन्य राज्यों से आए लोगों के लिए कहा कि उन्हें बुलाया नहीं गया था, इसलिए छिपकर बैठे हैं कि कहीं मैं नाराज न हो जाऊं। मैं नाराज नहीं हूं। उन्होंने यहां जो सीखा और देखा, उसे अपने राज्य में जाकर बताएं ताकि मेरे वहां आने पर इसी तरह का आयोजन हो सके।

इजराइल के हमलों की निंदा करने वाला प्रस्ताव पारित करेंगे : स्टालिन

» तमिलनाडु विधानसभा बैठक में उठाएंगे मामला

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

चेन्नई। तमिलनाडु के मुख्यमंत्री एम के स्टालिन ने कहा कि राज्य की विधानसभा गाजा पर इजराइली हमलों की निंदा करने के लिए एक प्रस्ताव पारित करेगी और तत्काल युद्धविराम की मांग करेगी तथा केंद्र से इस संबंध में उचित कदम उठाने का अनुरोध भी करेगी।

स्टालिन ने मांग की कि केंद्र सरकार गाजा में 'नरसंहार' रोकने के लिए इजराइल पर दबाव बनाए। उन्होंने कहा कि 14 अक्टूबर को विधानसभा की बैठक शुरू होने के बाद प्रस्ताव पारित किया जाएगा। स्टालिन ने कहा, ''भाजपा के नेतृत्व वाली केंद्र सरकार को इजराइल और उसका साथ दे रहे देशों पर दबाव बनाने का प्रयास करना चाहिए ताकि नरसंहार को रोका जा सके। तमिलनाडु के मुख्यमंत्री ने हाल के सप्ताहों में गाजा में हुई हत्याओं के खिलाफ सार्वजनिक रूप से अपना रुख व्यक्त किया है। उन्होंने आठ सितंबर को एक सोशल मीडिया पोस्ट में कहा था कि गाजा में जो कुछ हो रहा है, उससे वह इतने विचलित हैं कि शब्दों में बयां नहीं कर सकते।

उन्होंने कहा था कि जब निर्दोष लोगों की जान इस तरह जा रही हो, तो चुप रहना कोई विकल्प नहीं है। माकपा ने भारत सरकार से इजराइल के साथ सभी व्यापार समझौते रद्द करने की भी अपील की थी। माकपा सदस्यों ने एयरोस्पेस और रक्षा क्षेत्रों पर चल रहे एयरोडेफकॉन 2025 सम्मेलन में इजराइली कंपनियों के भाग लेने पर प्रतिबंध लगाने का भी आह्वान किया था।

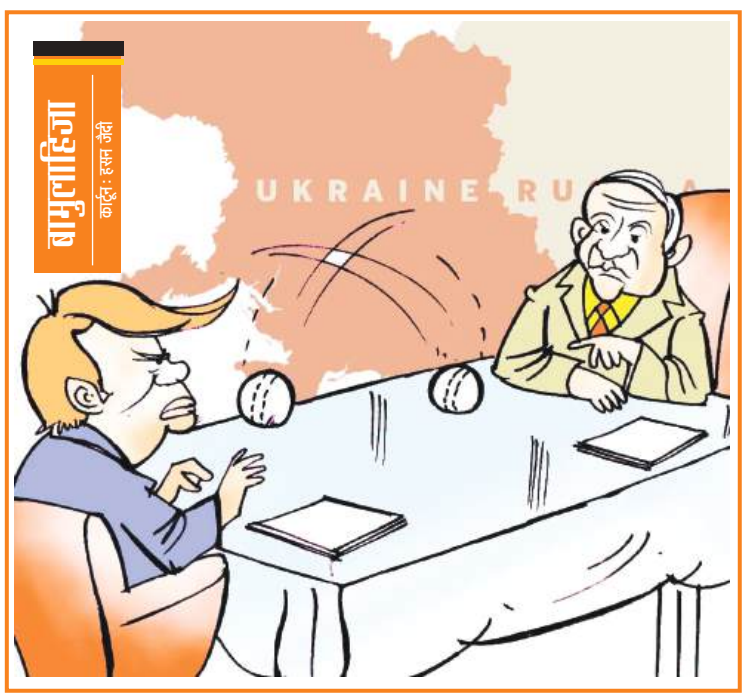

राजस्थान में केवल लूट और झूठ की सरकार : गहलोत

जल जीवन मिशन की कथित दुर्गति पर ध्यान दें केंद्रीय जलशक्ति मंत्री

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

जयपुर। पूर्व मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने जल जीवन मिशन के कार्यान्वयन में कमियों को लेकर कटाक्ष करते हुए कहा कि राजस्थान में केवल लूट और झूठ की सरकार चल रही है। उन्होंने कहा कि केंद्रीय जलशक्ति मंत्री को राजस्थान में जल जीवन मिशन की कथित दुर्गति पर ध्यान देना चाहिए।

गहलोत ने एक्स पर लिखा, राजस्थान में केवल लूट और झूठ की सरकार चल रही है। भाजपा सरकार ने 2024-25 के बजट में 25 लाख जल कनेक्शन जल जीवन मिशन के तहत देने की घोषणा की परन्तु केवल 9 लाख 44 हजार कनेक्शन ही दे सकी जो कांग्रेस सरकार द्वारा 2022-23 में लगाए गए 13 लाख 88 हजार व 2023-24 में लगाए गए 12 लाख 17 हजार कनेक्शन से भी कम था।

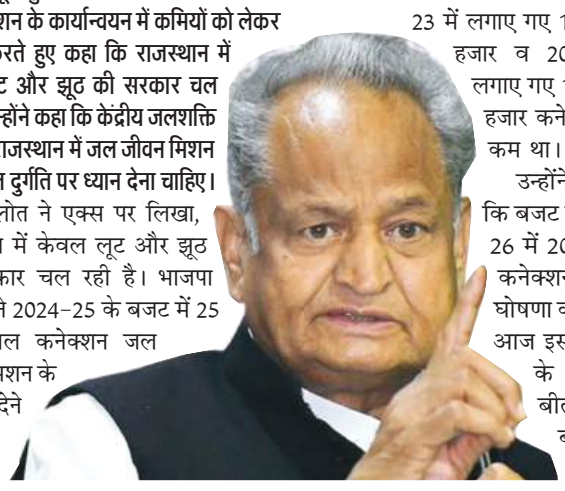

उन्होंने आगे कहा कि बजट वर्ष 2025-26 में 20 लाख नल कनेक्शन देने की घोषणा की गई परन्तु आज इस बजट वर्ष के छह महीने बीत जाने के बाद भी केवल 97 हजार कनेक्शन जारी किए जा सके हैं। इस औसत से इस बजट वर्ष में केवल 2 लाख कनेक्शन जारी होंगे। गहलोत के अनुसार, यह भाजपा सरकार का झूठ उजागर करता है।

पूर्व मुख्यमंत्री ने कहा, अब यह सामने आया है कि इस योजना को लागू कर रहे पीएचईडी विभाग के छह एडिशनल चीफ इंजीनियर, तीन सुपरिटेंडेंट इंजीनियर, 17 एक्सईएन को लम्बे समय से पदस्थापना का इंतजार कराया जा रहा है और अपने चहेते अधिकारियों को डबल चार्ज दिया हुआ है। इसकी वजह क्या है? क्या भ्रष्टाचार की इस नीयत के कारण ही भाजपा सरकार में जल जीवन मिशन फेल हो रहा है? उन्होंने कहा कि 11 अक्टूबर को जल शक्ति मंत्री सीआर पाटिल राजस्थान आ रहे हैं।

तमिलनाडु में सियासी बदलाव के संकेत

स्टालिन ने भाजपा को रोकने की रणनीति बनाई

» एनडीए ने कसी कमर
» बीजपी का ऑपरेशन डीएमके
» विजय के वोटों पर भी नजर

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

चेन्नई। बिहार चुनावों की सरगर्मी के बीच भाजपा ने अगले साल होने वाले दक्षिणी राज्य तमिलनाडु विस चुनाव के लिए तैयारी प्रारंभ कर दी है। हालांकि डीएमके नेता स्टालिन भाजपा को अपने राज्य में पांव नहीं जमाने के लिए हर जतन कर रहे हैं। चुनाव प्रभारी जय पांडा और सह-प्रभारी मुरलीधर मोहोल ने हाल ही में तमिलनाडु का दौरा किया और राज्य भाजपा नेतृत्व और अन्नाद्रमुक नेताओं के साथ व्यापक रणनीतिक चर्चा की।

सूत्रों के अनुसार, भाजपा का लक्ष्य छोटे दलों के साथ संभावित गठजोड़ की संभावना तलाश कर राज्य में मौजूदा डीएमके विरोधी भावना को एनडीए के पक्ष में मोड़ना है। तमिलनाडु विधानसभा चुनावों से पहले, भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) ने राज्य में नए राजनीतिक समीकरण बनाने की कोशिशें तेज कर दी हैं। पार्टी का ध्यान छोटे क्षेत्रीय दलों के साथ गठबंधन करके राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (एनडीए) को मजबूत करने पर है। चुनाव प्रभारी जय पांडा और सह-प्रभारी मुरलीधर मोहोल ने हाल ही में तमिलनाडु का दौरा किया और राज्य भाजपा नेतृत्व और अन्नाद्रमुक नेताओं के साथ व्यापक रणनीतिक चर्चा की। सूत्रों के अनुसार, भाजपा का लक्ष्य छोटे दलों के साथ संभावित गठजोड़ की संभावना तलाश कर राज्य में मौजूदा डीएमके विरोधी भावना को एनडीए के पक्ष में मोड़ना है।

टीवीके, के पास वर्तमान में लगभग 20 प्रतिशत वोट

भाजपा के आंतरिक आकलन बताते हैं कि अभिनेता थलपति विजय की पार्टी, टीवीके, के पास वर्तमान में लगभग 20 प्रतिशत वोट हैं, जिनमें से लगभग 60 प्रतिशत एनडीए विरोधी वोट हैं। इसलिए भाजपा विजय की बढ़ती लोकप्रियता का मुकाबला करने की योजना पर काम कर रही है। इस बीच, एनडीए के एक प्रमुख घटक, पट्टाली मक्कल काची (पीएमके) के भीतर आंतरिक मतभेद सामने आए हैं। सूत्र बताते हैं कि वरिष्ठ नेता एस रामदास एनडीए के साथ बने रह सकते हैं, जबकि उनके बेटे ए रामदास तटस्थ रहने या टीवीके के साथ गठबंधन करने पर विचार कर रहे हैं।

तमिलनाडु की राजनीति में नए रंग दिखने की उम्मीद

राजनीतिक पर्यवेक्षकों को नवंबर में तमिलनाडु की राजनीति में एक बड़े बदलाव की उम्मीद है, क्योंकि ओ. पन्नीरसेल्वम (ओपीएस), वी.के. शशिकला और टीटीवी दिनाकरन के नेतृत्व वाले अन्नाद्रमुक के तीन गुट अपनी भविष्य की रणनीति और राजनीतिक स्थिति के बारे में महत्वपूर्ण निर्णय ले सकते हैं। भाजपा की मुख्य रणनीति स्पष्ट है - छोटी पार्टियों को एनडीए के तहत लाकर डीएमके विरोधी वोटों के विभाजन को रोकना। हालांकि, निष्कासित अन्नाद्रमुक नेताओं को शामिल करने को लेकर गठबंधन के भीतर मतभेद बने हुए हैं।

ई. पलानीस्वामी व गृह मंत्री अमित शाह की बैठक का असर

पार्टी सूत्रों के अनुसार, हाल ही में दिल्ली में हुई एक बैठक के दौरान, ई. पलानीस्वामी ने गृह मंत्री अमित शाह को बताया कि निष्कासित नेताओं को वापस लाने से एनडीए की एकता प्रभावित हो सकती है। अगले महीने से भाजपा और अन्नाद्रमुक सत्तारूढ़ द्रमुक सरकार को निशाना बनाते हुए एक संयुक्त अभियान शुरू करने की योजना बना रहे हैं, जिसमें जनता की शिकायतों और राज्य के मुद्दों को उजागर किया जाएगा।

कहा- निष्कासित नेताओं को वापस लाने से एनडीए की एकता प्रभावित हो सकती है

मौजूदा हालात देंगे एनडीए को तनाव

कांग्रेस दलित अस्मिता से जोड़ने में जुटी

» सीजेआई पर हमला और रायबरेली लिंचिंग बिहार चुनाव में बनेंगे मुद्दा

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

पटना। बिहार चुनावों के समय दलितों पर बढ़ी घटनाएं एनडीए को तनाव दे सकतीं हैं। क्योंकि विपक्षी महागठबंधन व कांग्रेस भाजपा को सीजेआई बी आर गवई पर हुए हमले को दलित अस्मिता से जोड़ते हुए मुद्दा बनाने की तैयारी की है। इसके लिए केंद्र की मोदी सरकार को भी घेरा गया है।

भारत के मुख्य न्यायाधीश बीआर गवई पर हमले के खिलाफ कांग्रेस द्वारा तीखा विरोध जताए जा रहा है। वहीं कांग्रेस नेता राहुल गांधी भी रायबरेली में हरिओम बाल्मीकी की लिंचिंग को भी जोर-शोर से उठा रहे हैं। ये एक तरह से तय लग रहा है कि कांग्रेस इसे बिहार विधानसभा चुनाव 2025 में मुद्दा बनाएगी। हाल ही में कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे ने इस बारे में एक बयान भी दिया है।

पीएम मोदी ने भी बताया था निंदनीय

हालांकि पीएम मोदी ने भी सीजेआई गवई पर हमले को निंदनीय कहा था। पीएम मोदी ने X पर लिखा था कि भारत के मुख्य न्यायाधीश, न्यायमूर्ति बी.आर. गवई जी से बात की। आज सुबह सुप्रीम कोर्ट परिसर में उन पर हुए हमले से हर भारतीय क्षुब्ध है। हमारे समाज में ऐसे निंदनीय कृत्यों के लिए कोई जगह नहीं है। यह अत्यंत निंदनीय है। ऐसी स्थिति में न्यायमूर्ति गवई द्वारा प्रदर्शित धैर्य की मैं सराहना करता हूं। यह न्याय के मूल्यों के प्रति उनकी प्रतिबद्धता और हमारे संविधान की भावना को मजबूत करने की उनकी प्रतिबद्धता को दर्शाता है। लेकिन इसको लेकर दलित एवं आदिवासी संगठनों के राष्ट्रीय परिसंघ के अध्यक्ष अशोक भारती ने अखबार को कहा कि प्रधानमंत्री ने जो कहा वह दिखावा है, गवई के साथ जो हुआ वह वास्तविकता है।

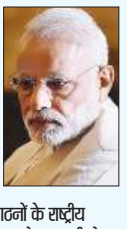

बिहार चुनाव में दलित और आदिवासी संगठन सक्रिय

एक अखबार को दलित और आदिवासी संगठनों के अध्यक्ष ने कहा है कि सीजेआई पर हमला बिहार चुनाव में एक बड़ा राजनीतिक मुद्दा होगा। दलितों ने देखा है कि कैसे गवई पर हमला हुआ और वाल्मीकि की लिंचिंग की गई। मैं पूरे विश्वास के साथ कह सकता हूं कि इस बार दलित वोटों का एक बड़ा हिस्सा दूसरी तरफ जाएगा।

मल्लिकार्जुन खरगे का बयान के मायने

बुधवार को बेंगलुरु में एक प्रेस कॉन्फ्रेंस में कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे ने कहा कि केंद्र सरकार के राज में दलित नागरिकों के लिए कोई सम्मान नहीं है। सीजेआई बीआर गवई पर हमले और रायबरेली में हरिओम वाल्मीकि की कथित मॉब लिन्चिंग का जिक्र करते हुए उन्होंने कहा, दलित नागरिक, चाहे वह आम आदमी हो या कोई उच्च पदस्थ व्यक्ति - इस सरकार में (उनके लिए) कोई सम्मान नहीं है। हमें चुप रहने के बजाय लड़ना होगा - अगर मुख्य न्यायाधीश जैसे पद पर बैठे व्यक्ति पर जूता फेंककर उसका अपमान किया जाता है, तो एक आम आदमी, एक अधिकारी या क्लर्क की क्या हालत होगी?

बिहार की 19.65 प्रतिशत आबादी दलित

महागठबंधन ने भी मुद्दा बनाने की तैयारी की बिहार की 19.65 प्रतिशत आबादी दलित है। अखबार के अनुसार महागठबंधन के एक वरिष्ठ नेता ने कहा कि गवई पर हमला महागठबंधन के प्रचार अभियान का एक प्रमुख मुद्दा होगा। उन्होंने कहा, हम दलितों पर हमले की सभी हालिया घटनाओं को उजागर करेंगे।

जिद... सच की

Sanjay Sharma

editor.sanjaysharma
@Editor_Sanjay

मौसमी चक्र के प्रभाव से बचने के हों उपाय

पिछले एक हफ्ते से पहाड़ी राज्यों से वर्फबारी की खबरें आने लगी हैं। वहीं उत्तर भारत के कुछ हिस्से में सप्ताह के पहले तीन दिन खूब पानी बरसा। अब उमस व धूप से लोग परेशान हो रहे हैं। इससे बीमारियां भी तेजी से फैल रही हैं। मौसमी चक्र में आ रहा यह अप्रत्याशित बदलाव जलवायु परिवर्तन का संकेत तो है ही, जिसके चलते देश को पिछले दिनों जरूरत से ज्यादा बारिश या कम समय में अत्यधिक बारिश का सामना करना पड़ा है। इस भीषण बारिश के चलते जहां देश के अधिकांश हिस्से बाढ़ और जलभराव की समस्या से जूझने को विवश हुए, वहीं वर्षा जलजनित दुश्वारियों से भी बेहाल दिखे। वह बात दीगर है कि बारिश के भीषण कहर से देश के मैदानी इलाके भी अछूते नहीं रह सके। मैदान में लगातार बारिश का कहर इसी का नतीजा रहा। इस बार तो आफत की बारिश की मार ने राजस्थान तक को नहीं बख्शा। दो सक्रिय पश्चिमी विक्षोभ, हरियाणा में चक्रवाती स्थितियां, बंगाल की खाड़ी में बने निम्न दबाव के क्षेत्र ने हालत को और विषम बना दिया। इसमें किंचित भी संदेह नहीं है कि अब भारतीय मानसून की प्रकृति बदल रही है। कभी सूखे जैसी स्थिति और कभी रिकॉर्ड तोड़ वर्षा का सामना अब आम होता जा रहा है। महासागरीय परिस्थितियां और क्षेत्रीय दबाव तंत्र मिलकर मानसून को अप्रत्याशित बना रहे हैं।

भीषण बारिश की मार झेल रहे इन राज्यों में भूस्खलन की जितनी अधिक घटनाएं हुईं, वह एक रिकॉर्ड है। यह सब अनियोजित विकास, अनियंत्रित निर्माण और पहाड़ी राज्यों में पहाड़ हो या नदियों या प्राकृतिक संसाधनों से अनावश्यक छेड़छाड़ का नतीजा है। दरअसल इस बार इस विनाश का अहम कारण पूर्वी-पश्चिमी हवाओं की टक्कर तो है ही, जबकि ऐसा पहली बार नहीं हुआ है, पहले भी ऐसा हुआ है, पर इस बार कुछ ज्यादा ही हुआ है। दो पश्चिमी विक्षोभ लंबे समय तक इस क्षेत्र में सक्रिय रहे हैं और बंगाल की खाड़ी में निम्न दबाव का क्षेत्र भी काफी समय तक बना रहा है। सबसे अहम परिवहन, उद्योग, वनों का कटाव वातावरण में ग्रीन हाउस गैसों का बड़ा कारण है, जिससे पृथ्वी का वैश्विक तापमान बढ़ता है। फिर इस इलाके में ज्यादा बारिश का होना भी एक कारण रहा है, कमजोर आधारभूत ढांचों का निर्माण और जल निकासी का समुचित उपाय न किया जाना भी अहम वजह रही है। इसके साथ ही साथ एलनीनो जैसी प्राकृतिक घटनाएं भी मौसम को प्रभावित करती हैं। इसका दुष्परिणाम भारत समेत दूसरे देशों में सूखे का कारण बनता है। असलियत में मौजूदा मौसमी बदलाव महासागरीय हालातों से जुड़ा हुआ है। प्रशांत महासागर में एलनीनो कमजोर पड़ चुका है। ला-नीना के आसार हैं। यह हालात मानसून को और अधिक सक्रिय करते हैं।

“ इस बार तो आफत की बारिश की मार ने राजस्थान तक को नहीं बख्शा। दो सक्रिय पश्चिमी विक्षोभ, हरियाणा में चक्रवाती स्थितियां, बंगाल की खाड़ी में बने निम्न दबाव के क्षेत्र ने हालत को और विषम बना दिया। इसमें किंचित भी संदेह नहीं है कि अब भारतीय मानसून की प्रकृति बदल रही है। कभी सूखे जैसी स्थिति और कभी रिकॉर्ड तोड़ वर्षा का सामना अब आम होता जा रहा है।

(इस लेख पर आप अपनी राय 9559286005 पर एसएमएस या info@4pm.co.in पर ई-मेल भी कर सकते हैं)

सरकारी धन से चुनावी रेवड़ियां बांटने के खतरे

विश्वनाथ सचदेव

बिहार में चुनावों की तारीखें घोषित होने के साथ ही 'राजनीतिक रिश्वतखोरी' की बातें चलने लगी हैं। राजनीतिक रिश्वतखोरी यानी मतदाता को रेवड़िया बांटकर उन्हें अपने पक्ष में वोट देने के लिए लुभाना। कहा यह भी जा रहा है कि चलो अब कुछ दिन रेवड़ियां बांटने की घोषणाओं से तो पीछा छूटेगा। यहां रेवड़ियों का मतलब वह 'मुफ्त की सेवाएं' हैं जिनका लालच देकर राजनेता मतदाता को बरगलाते हैं। पहले बिजली-पानी जैसी जीवनोपयोगी चीजें मतदाता को दी जाती थीं, देने का वादा किया जाता था, और अब तो यह नकद पैसा बांटा जा रहा है। बिहार सरकार ने कुछ ही दिन पहले एक करोड़ से अधिक महिलाओं के बैंक खातों में दस हजार रुपये जमा करवा कर इस रेवड़ी संस्कृति को एक नया आयाम दे दिया है। एक करोड़ महिलाओं का मतलब एक करोड़ परिवारों तक पहुंचना है।

महिलाओं के सशक्तीकरण के नाम पर यह सीधी रिश्वत है। सवाल यह पूछा जा रहा है कि किसी सरकार द्वारा इस तरह की नकद राशि बांटना क्या सरकार के पैसों से चुनाव जीतना नहीं है? यदि ऐसा है तो फिर इसे अपराध की श्रेणी में क्यों न रखा जाये, और यदि यह अपराध है तो फिर इसकी कोई सजा तय क्यों नहीं होनी चाहिए? पूछा तो यह भी गया है कि सरकार द्वारा मुफ्त राशन बांटना भी क्या एक तरह से रेवड़ी बांटना नहीं है? आश्वासन वाली राजनीति कोई नयी चीज नहीं है। और ऊपरी तौर पर देखें तो यह उतनी गलत भी नहीं लगती। आखिर जनता के हित की बात सोचना सरकार का काम है, और जनता को वित्तीय सहायता देकर जनता की सहायता ही तो की जाती है। पर सवाल उठता है कि जनता की यह 'मदद' सरकारों और राजनीतिक दलों को चुनावों से पहले ही याद क्यों आती है? सवाल यह भी उठाना चाहिए कि राजनीति में 'तोहफे' बांटने की यह परंपरा अपराध की श्रेणी में क्यों नहीं आनी चाहिए? चुनाव से कुछ अरसा पहले, या वैसे भी, हमारी सरकारें जनता की मदद की घोषणाएं शुरू कर देती हैं और मीडिया में इसे मुख्यमंत्री या प्रधानमंत्री के तोहफे के रूप में प्रचारित किया जाता है।

कुछ ही साल पहले चुनाव-प्रचार के दौरान स्वयं प्रधानमंत्री ने बिहार में खुले आम तोहफों की बोली लगायी थी। एक चुनाव-सभा में उन्होंने कुछ ऐसा कहा था, 'कितने दूं, दस करोड़?, सौ करोड़?, हजार करोड़? या लाख करोड़?' उनकी घोषणा पर श्रोताओं ने तालियां बजाकर इसका स्वागत किया

था, निश्चित रूप से इस तोहफे का कुछ असर चुनाव परिणाम पर भी पड़ा होगा। पर चुनावी लाभ के लिए जनता के पैसों के तोहफे इस तरह बांटने की घोषणा क्या विद्रूप पहल नहीं मानी जानी चाहिए? सच तो यह है कि इसे तोहफा या उपहार कहना ही गलत है। यह अनुचित आर्थिक लेन-देन ही है- और रिश्वत देना या लेना दोनों अपराध हैं! इस अपराध की सजा क्यों तय नहीं होती? इस सवाल का सीधा-सा जवाब यह है कि यह अपराध सबकी मिली-भगत से हो रहा है। राजनेताओं को, सरकारों को, राजनीतिक दलों को रेवड़ियां बांटने, या कहना चाहिए रिश्वत देकर अपना काम निकालने का यह एक आसान तरीका लगता है। पर यह गलत परंपरा है जन-कल्याण की योजनाएं बनाना, उन्हें ईमानदारी के साथ क्रियान्वित करना सरकारों का काम है। पर यह काम चुनावों से ठीक पहले ही क्यों? एक करोड़ महिलाओं को बिहार की नीतीश सरकार द्वारा दस हजार रुपये देने और विपक्ष द्वारा पच्चीस सौ रुपये प्रति माह देने का वादा करने में कोई विशेष अंतर नहीं है। कहा जा सकता है कि इस तरह की घोषणाएं वर्तमान या भावी सरकार की रीति-नीति बताती हैं, पर बताने की यह आवश्यकता चुनावों के समय पर ही किसी को याद क्यों आती है? ऐसा नहीं है कि इस तरह के सवाल पहले कभी उठे नहीं हैं। उठते रहे हैं ये सवाल, पर राजनीतिक नफा-नुकसान का गणित इन सवालों को उठाने वाली नैतिकता पर अक्सर हावी हो जाता है। कभी महिला मतदाताओं को साड़ियां बांटकर तमिलनाडु की जयललिता ने वोट के लिए रिश्वत की इस परंपरा की शुरुआत की थी। द्रमुक के ही करुणानिधि ने दो रुपये किलो चावल बांटकर इस शुरुआत को चुनाव जीतने की एक कला के रूप में विकसित किया।

फिर तो जैसे देश के अलग-अलग हिस्सों में इस कला को निखारने की एक प्रतिस्पर्धा ही चल पड़ी। ऐसा भी नहीं है कि इस प्रवृत्ति पर अंकुश लगाने की जरूरत की ओर किसी का ध्यान न गया हो। स्वयं प्रधानमंत्री मोदी के नेतृत्व में भाजपा ने इस 'रेवड़ी संस्कृति' को मुद्दा बनाया था। पर जल्दी ही उन्हें यह अहसास हो गया कि यह संस्कृति तो स्वयं उनके लिए भी लाभदायक है और वे भी लाभ लुटाकर लाभ कमाने की इस प्रतिस्पर्धा में शामिल हो गये। अब तो हमारे राजनीतिक दल यह सोचना भी नहीं चाहते कि इस प्रतियोगिता में राज्यों का बजट घाटा लगातार बढ़ता जा रहा है।

शिक्षकों की बाट जोहते सरकारी स्कूल

दीपिका अरोड़ा

शिक्षा ग्रहण करना भारत के हर बच्चे का अधिकार है किंतु सरकारी विद्यालयों में शिक्षकों की अपर्याप्त संख्या देशभर के लिए बड़ी चुनौती बनकर उभर रही है। इसी समाचार-पत्र में प्रकाशित रिपोर्ट के तहत, हरियाणा के सरकारी प्राथमिक व माध्यमिक स्कूल शिक्षकों की भारी कमी से जूझ रहे हैं। सर्वाधिक चिंतनीय अवस्था नूंह जिले की है, जहां 901 विद्यालयों में 3,425 शिक्षकों के पद रिक्त पाए गए। विधानसभा के हालिया मानसून सत्र में सरकार ने भी प्रदेश के 14,295 विद्यालयों में 12,000 से अधिक शिक्षक पद रिक्त होने की बात स्वीकारी। समूचे तौर पर सरकारी शैक्षणिक व्यवस्था का संज्ञान लें तो भारत के हर राज्य में कमोबेश यही स्थिति है। दिसंबर, 2023 में, केंद्र सरकार ने प्राथमिक एवं माध्यमिक स्तर पर क्रमशः 7,22,413 तथा 1,24,262 अध्यापकों की कमी बताई थी। विशेषकर ग्रामीण क्षेत्रों में लाखों शिक्षक-पद खाली हैं।

गहनतापूर्वक विचारें तो यह अभाव मात्र एक संख्या न होकर समूची शिक्षा व्यवस्था कमजोर करने वाला संकट है। गुणवत्तापूर्वक शिक्षा में सामाजिक, भावनात्मक तथा शारीरिक विकास के साथ-साथ शैक्षणिक उपलब्धि भी शामिल होती है। पर्याप्त शिक्षकों के अभाव में जहां व्यक्तिगत शिक्षा प्रदान करने में कठिनाई आती है, वहीं छात्र समग्र विकास के अवसरों जैसे पाठ्येतर गतिविधियों, मार्गदर्शन आदि से वंचित रह जाते हैं। स्पष्ट शब्दों में, शिक्षकों की कमी गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करने में एक बड़ी बाधा है, जिसके सीखने के परिणामों, समानता तथा समग्र छात्र विकास पर दूरगामी प्रभाव पड़ सकते हैं। ग्लोबल पार्टनरशिप फॉर एजुकेशन की एक रिपोर्ट के अनुसार, पर्याप्त शिक्षक सहयोग के बिना छात्रों से अन्य गतिविधियों में भाग लेने की अपेक्षा घटती है, वास्तव में जो उनके सर्वांगीण विकास में काफी हद तक सहायक बन सकती थीं। शिक्षा की गुणवत्ता पर प्रतिकूल प्रभाव डालने वाली यह कमी छात्रों की संख्या में गिरावट आने का सबब भी बनती देखी गई।

अनेक बार शिक्षकों की कमी के चलते शैक्षणिक सत्र समय पर पूरे नहीं हो पाते। हाशिये पर रहने वाले समुदायों, खासकर ग्रामीण तथा आर्थिक रूप से वंचित इलाकों पर इसका असमान रूप से विशेष असर देखने में आया। इन क्षेत्रों के छात्रों की योग्य शिक्षकों तक पहुंच सीमित होने के कारण शैक्षिक असमानताएं अपेक्षाकृत बढ़ जाती हैं। यूनेस्को के अनुसार, भारत में पाठशाला न जाने वाले 1.9 करोड़ बच्चों में से बहुतेरे इन्हीं वंचित समुदायों में आते हैं। दूसरे शब्दों में, शैक्षिक असमानताएं उपजाने के साथ यह कमी शिक्षा तंत्र पर वित्तीय दवाब भी बढ़ा देती है। राष्ट्रीय बाल अधिकार संरक्षण आयोग (एनसीपीसीआर) की एक रिपोर्ट के अनुसार, कई राज्यों में शिक्षक 50-60 या उससे ज्यादा छात्रों की कक्षाओं का प्रबंधन करते हैं। हरियाणा के नूंह, पलवल तथा यमुनानगर जैसे जिलों में 80-100 छात्र पढ़ाने के लिए एक ही शिक्षक नियुक्त है, जबकि राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020 के मुताबिक़, प्राथमिक एवं माध्यमिक स्तर पर शिक्षक-छात्र अनुपात क्रमानुसार 1: 30 तथा 1:35 होना चाहिए।

अतिरिक्त कार्यभार जहां शिक्षकों की थकान बढ़ाता है, वहीं मनोबल गिराता है। स्थिति के परिणामस्वरूप रटंत विद्या पर निर्भरता बढ़ने के कारण छात्रों की रचनात्मकता तथा आलोचनात्मक सोच खासी प्रभावित होती है। दीर्घकालिक असर के रूप में सामाजिक प्रगति बाधित होती है। दरअसल, शिक्षकों की कमी का जीडीपी प्रतिशत के रूप में शिक्षा के निवेश से गहरा संबंध है। भारत में शिक्षा पर होने वाला सरकारी व्यय जीडीपी के 3-4 प्रतिशत के आस-पास है, जोकि एनईपी 2020 की 6 प्रतिशत आवंटन की सिफारिश तथा वैश्विक औसत से कहीं कम है। कम निवेश सरकार द्वारा योग्य शिक्षकों की भर्ती, प्रशिक्षण तथा उन्हें बनाए रखने की क्षमता सीमित करता है। इससे राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020 के लक्ष्य पर सवालिया निशान उठना भी स्वाभाविक है। शिक्षकों की कमी का गंभीर मुद्दा बहुआयामी दृष्टिकोण अपनाकर ही निपटाया जा सकता है। समस्या की प्रकृति समझते हुए सरकार मजबूत एवं प्रभावी भर्ती रणनीतियां लागू करे, जिसमें महत्वाकांक्षी शिक्षकों के लिए छात्रवृत्ति, प्रोत्साहन, शैक्षणिक कौशल तथा विषय ज्ञान पर बल देने वाले व्यापक कार्यक्रम भी बराबर शामिल हों। योग्य शिक्षकों की कमी दूर करने हेतु सरकारी निकायों, शैक्षणिक संस्थानों तथा स्थानीय समुदायों के समन्वित प्रयासों की भी महती आवश्यकता है।

शिक्षकों की भर्ती, प्रशिक्षण तथा सहायता में अपेक्षित निवेश करके भारत एक अधिक प्रभावी तथा समावेशी शिक्षा प्रणाली बना सकता है, जो सभी छात्रों को भविष्य की चुनौतियों के लिए तैयार करे। इसके साथ ही स्कूल के बुनियादी ढांचे में सुधार तथा आधुनिक संसाधनों की उपलब्धता पर भी ध्यान देना होगा। शिक्षकों व छात्रों के लिए पर्याप्त सुविधाएं उपलब्ध कराने से ही एक अनुकूल शिक्षण वातावरण निर्मित होता है। जैसा कि विशेषज्ञ कह रहे हैं, समस्या केवल भर्ती से नहीं सुलझ सकती। ग्रामीण व पिछड़े इलाकों में तैनाती, प्रशिक्षण तथा संशोधन जरूरी हैं। एनईपी के अनुसार शिक्षक केवल पढ़ाने वाले नहीं बल्कि सीखने की प्रेरणा देने वाले होने चाहिए। बच्चों की अपार क्षमताओं को दिशाज्ञान मिलना अत्यावश्यक है, जो गुणवत्तापूर्ण शिक्षा से ही संभव होगा। आधारभूत ढांचा सशक्त हो एवं पर्याप्त संख्या में योग्य गुरु तनावरहित होकर कार्य करें तो शिक्षा में गुणवत्ता प्रतिभासित होना सुनिश्चित है।

भारत की सबसे खूबसूरत और रोमांचक ट्रेन यात्राएं

भारत अपनी विविधता के लिए पहचाना जाता है। यही सिर्फ भाषाओं और पहचानने की विविधता नहीं है, बल्कि प्राकृतिक दृश्यों की भी विविधता देखने को मिलती है। भारत में बर्फ से ढके पहाड़ हैं तो हरी-भरी पहाड़ियां भी हैं, समुद्र है तो रेगिस्तान भी हैं। जंगल हैं तो झील और झरने भी हैं। इन सभी शानदार नजारों का आनंद आप यात्रा के दौरान कर सकते हैं और अगर ये यात्रा यादगार रेल मार्ग के जरिए हो तो सफर का मजा ही दोगुना हो जाता है। आप चाहे समुद्र के ऊपर से गुजरती ट्रेन में बैठे या हिमालय की पहाड़ियों में घूमती रेलवे लाइन पर हर ट्रेन यात्रा एक अनोखा अनुभव देती है। तो आपको भारत की 5 सबसे खूबसूरत और रोमांचक ट्रेन यात्राओं अनुभव एक बार जरूर लेना चाहिए।

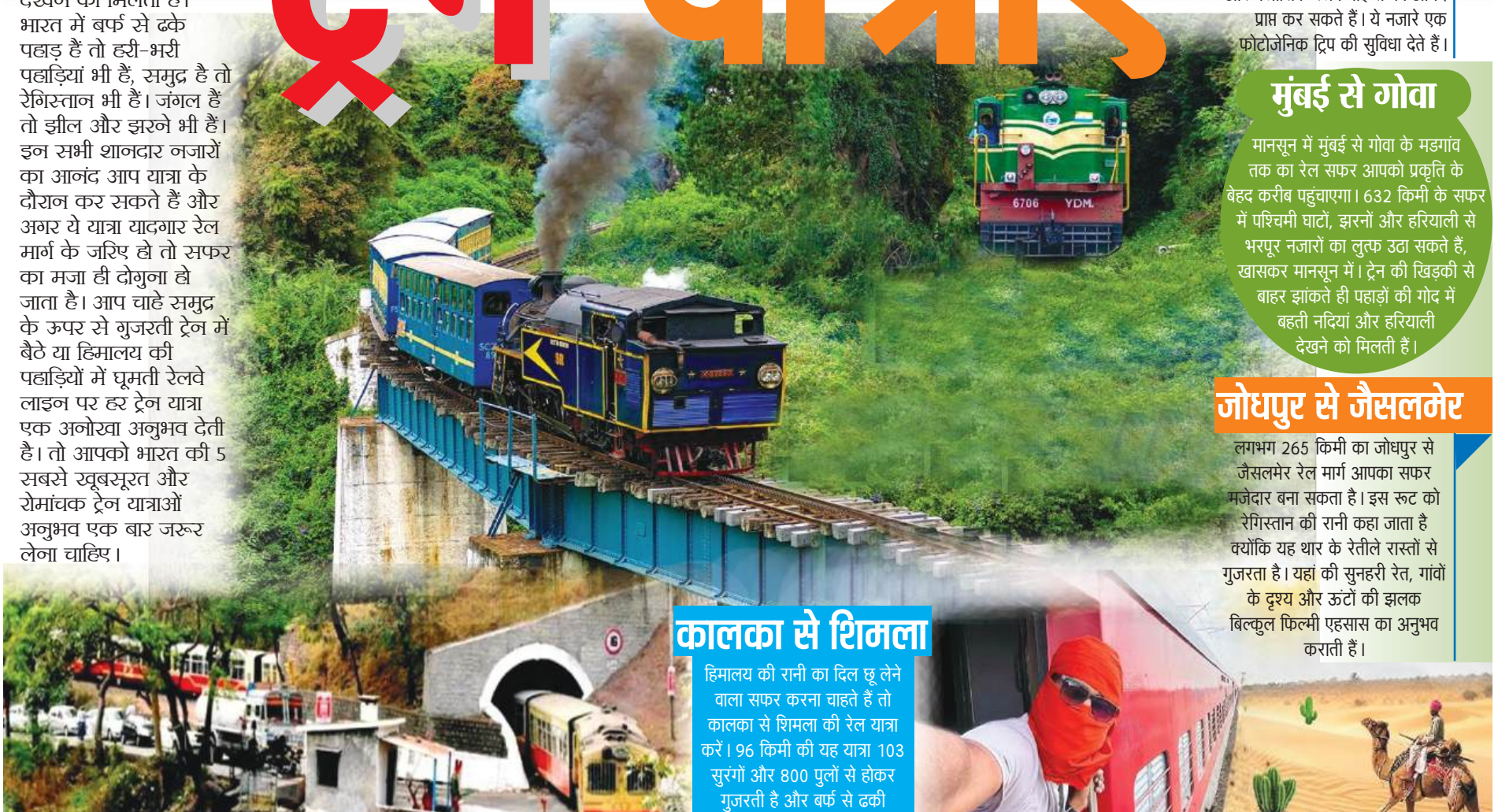

नीलगिरी माउंटेन रेलवे

मेट्टुपालयम से ऊटी के रेल सफर में 28 किमी का दायरा बहुत शानदार नजारों से परिपूर्ण है। परिवार या पार्टनर के साथ इस रूट का रेल सफर दिल जीत लेगा। यह यूनेस्को वर्ल्ड हेरिटेज रूट घोषित है। यह भारत की सबसे पुरानी माउंटेन ट्रेन है, जो स्टीम इंजन से चलती है। मार्ग में आप चाय के बागान, घाटी के दृश्य और क्लासिक रेलवे वाइब्स का आनंद प्राप्त कर सकते हैं। ये नजारे एक फोटोजेनिक ट्रिप की सुविधा देते हैं।

मुंबई से गोवा

मानसून में मुंबई से गोवा के मडगांव तक का रेल सफर आपको प्रकृति के बेहद करीब पहुंचाएगा। 632 किमी के सफर में पश्चिमी घाटों, झरनों और हरियाली से भरपूर नजारों का लुत्फ उठा सकते हैं, खासकर मानसून में। ट्रेन की खिड़की से बाहर झांकते ही पहाड़ों की गोद में बहती नदियां और हरियाली देखने को मिलती हैं।

जोधपुर से जैसलमेर

लगभग 265 किमी का जोधपुर से जैसलमेर रेल मार्ग आपका सफर मजेदार बना सकता है। इस रूट को रेगिस्तान की रानी कहा जाता है क्योंकि यह थार के रेतीले रास्तों से गुजरता है। यहां की सुनहरी रेत, गांवों के दृश्य और ऊंटों की झलक बिल्कुल फिल्मी एहसास का अनुभव कराती हैं।

कालका से शिमला

हिमालय की रानी का दिल छू लेने वाला सफर करना चाहते हैं तो कालका से शिमला की रेल यात्रा करें। 96 किमी की यह यात्रा 103 सुरंगों और 800 पुलों से होकर गुजरती है और बर्फ से ढकी पहाड़ियां दिखाती है। जैसे-जैसे ट्रेन ऊंचाई की ओर बढ़ती है, ठंडी हवा और सुंदर नज़ारे दिल जीत लेते हैं।

हंसना मना है

टीचर- इतने दिन कहां थे, स्कूल क्यों नहीं आए? गोलू- बर्ड फ्लू हो गया था मैम। टीचर- पर ये तो पक्षियों को होता है इंसानों को नहीं। गोलू- इंसान समझा ही कहां आपने...रोज तो मुर्गा बना देती हो..

पड़ोसी- यार तेरे घर से रोज हंसी की आवाज आती है। इस खुशहाल जिंदगी का राज क्या है? पप्पू - वो क्या है ना कि मेरी बीवी रोज मुझे जूतों से मारती है, लग जाए तो वो हंसती है और ना लगे तो मैं हंसता हूं! बस ऐसे ही हंसी-खुशी जिंदगी गुजर रही है... पड़ोसी बेहोश...

पप्पू- भाई तुम्हारे हाथ-पैर कैसे टूट गए? गप्पू- लड़की का फोन रिचार्ज कराने के चक्कर में... पप्पू- क्यों भाई? रिचार्ज के पैसे नहीं दिए क्या? गप्पू- अरे भाई जिस दुकान पे रिचार्ज कराने गया था, वो दुकानदार, लड़की का भाई निकला!

लड़का-लड़की होटल में गए... वेटर- मैम आप क्या लेंगी? लड़की- मिर्च वाला, घेवर! वेटर- क्या? लड़की- बोला न मिर्च वाला घेवर! वेटर (हैरानी से) - क्या? लड़का- अरे भाई गांव की है, तू टेंशन मत ले, पिज्जा मांग रही है!

कहानी | मनपसंद मिठाई

सर्दियों में महाराज कृष्णदेव राय, राजपुरोहित और तेनालीराम महल के बागीचे में टहल रहे थे। महाराज बोले, इस बार बहुत गजब की ठंड पड़ रही है। सालों में ऐसे ठंड नहीं पड़ी। ये मौसम तो भरपूर खाने और सेहत बनाने का है। क्यों राजपुरोहित जी, बिल्कुल सही कह रहे हैं महाराज आप। इस मौसम में ढेर सारे सूखे मेवे, फल और मिठाइयां खाने का मजा ही अलग होता है, महाराज बोले, वैसे ठंड में कौन सी मिठाइयां खाई जाती हैं? राजपुरोहित बोले, महाराज सूखे मेवों की बनी ढेर सारी मिठाइयां जैसे काजू कतली, बर्फी, हलवा, गुलाब जामुन, आदि। ऐसी और भी कई मिठाइयां हैं, जो हम ठंड में खा सकते हैं। यह सुनकर महाराज हंसने लगे और तेनालीराम की तरफ मुड़कर बोले, आप बताइए तेनाली। आपको ठंड में कौन सी मिठाई पसंद है? इस पर तेनाली ने जवाब दिया, महाराज, राजपुरोहित जी, आप दोनों रात को मेरे साथ चलिए। मैं आपको अपनी मनपसंद मिठाई खिला दूंगा। साथ क्यों? आपको जो मिठाई पसंद है, हमें बताइए। हम महल में ही बनवा देंगे, महाराज ने बोला। नहीं महाराज, वह मिठाई यहां किसी को बनानी नहीं आएगी। आपको मेरे साथ बाहर ही चलना होगा, चलिए ठीक है। आज रात को खाने के बाद की मिठाई हम आपकी मनपसंद जगह से ही खाएंगे। महाराज और राजपुरोहित ने साधारण कपड़े पहने और तेनाली के साथ चल पड़े। गांव पार करके, खेतों में बहुत दूर तक चलने के बाद महाराज बोले, हमें और कितना चलना पड़ेगा तेनाली? आज तो तुमने हमें थका दिया है। बस कुछ ही दूर और। जब वो पहुंच गए, तो तेनाली ने महाराज और राजपुरोहित को एक खाट पर बिठवा दिया और खुद मिठाई लेने चले गए। थोड़ी देर में वे अपने साथ तीन कटोरियों में गर्मा गर्म मिठाई ले आए। जैसे ही महाराज ने उस मिठाई को चखा उनके मुंह से वाह के अलावा और कुछ नहीं निकला। महाराज और राजपुरोहित एक बार में पूरी मिठाई चट कर गए। इसके बाद उन्होंने तेनाली से कहा, वाह पंडित रामाकृष्णा! मजा आ गया! क्या थी यह मिठाई? हमने यह पहले कभी नहीं खाई है। महाराज की बात पर तेनालीराम मुस्कुराए और बोले, महाराज ये गुड़ था। यहां पास ही में गन्नों का खेत है और किसान उसी से यहां रात को गुड़ बनाते हैं। मुझे यहां आकर गुड़ खाना बहुत पसंद है। मेरा मानना है कि गर्मागर्म गुड़ भी बेहतरीन मिठाई से कम नहीं होता। बिल्कुल, पंडित रामा, बिल्कुल। इसी बात पर हमारे लिए एक कटोरी मिठाई और ले आइए। इसके बाद तीनों ने एक कटोरी गुड़ और खाया और फिर महल को लौट गए।

7 अंतर खोजें

जानिए कैसा रहेगा कल का दिन

पंडित संदीप आत्रेय शास्त्री

लेखक प्रसिद्ध ज्योतिषविद हैं। सभी प्रकार की समस्याओं के समाधान के लिए कॉल करें-9837081951

मेष आज का दिन आपके लिए शानदार रहेगा। करियर के क्षेत्र में उन्नति के योग हैं। आपके प्रयासों को पहचान मिलेगी और वरिष्ठों का सहयोग प्राप्त होगा। सेहत में सुधार होगा।

वृषभ आज आपका भाग्य पूरी तरह से साथ देगा। धर्म-कर्म के कार्यों में आपकी रुचि बढ़ेगी। नौकरी में बदलाव का सोच रहे हैं तो यह समय अनुकूल है। सेहत का ध्यान रखें।

मिथुन आज का दिन आपके लिए मिला-जुला रहेगा। आर्थिक लाभ के योग हैं, लेकिन सामाजिक कार्यों से जुड़े लोगों को कुछ बाधाओं का सामना करना पड़ सकता है।

कर्क आज आप अपनी रचनात्मकता पर ध्यान केंद्रित करेंगे। आपके काम से लोग प्रभावित होंगे और आपको सराहना मिलेगी। अपनी योजनाओं को गति देंगे और आर्थिक सौदेबाजी में सफल रहेंगे।

सिंह आज का दिन आपके करियर में उतार-चढ़ाव ला सकता है। हालांकि, मित्रों और शुभचिंतकों का सहयोग मिलेगा। आय के नए स्रोत खुलने और बड़े धन लाभ की संभावना है।

कन्या आज आप अपनी निर्णय लेने की क्षमता से लाभ उठाएंगे। कार्यक्षेत्र में कामकाज के चलते व्यस्तता अधिक रहेगी, लेकिन सभी रुके हुए काम पूरे हो जाएंगे।

तुला कोई बड़ा निवेश सोच-समझकर करें। आज का दिन आपके लिए चुनौतियों से भरा हो सकता है, इसलिए धैर्य रखें। प्राइवेट नौकरी करने वालों को अपनी मेहनत के लिए पहचान मिलेगी।

वृश्चिक आज आपका पराक्रम रंग लाएगा। रोजी-रोजगार में तरक्की के योग हैं। व्यावसायिक सफलता मिलेगी। स्वास्थ्य अच्छा रहेगा। व्यापार में लाभ होगा।

धनु आज आपको जुआ, सट्टा या लॉटरी जैसे जोखिम भरे कामों से बचना चाहिए। अपनी जुबान पर नियंत्रण रखें, अन्यथा परिवार में किसी बात को लेकर विवाद हो सकता है।

मकर आज आपके लिए सकारात्मक ऊर्जा का संचार होगा। कार्य और व्यापार में तरक्की मिलेगी। कार्यक्षेत्र में प्रबंधन से जुड़े मामले आपके पक्ष में रहेंगे। रोमांटिक आकर्षण में स्पष्टता रखें।

कुम्भ आज का दिन आपके लिए कुछ खर्चों वाला हो सकता है, इसलिए बजट का ध्यान रखें। यात्रा पर जाने के योग हैं। विरोधी सक्रिय हो सकते हैं, इसलिए सतर्क रहें।

मीन आज आपकी आय में वृद्धि हो सकती है। रुका पैसा वापस मिलेगा। कार्यक्षेत्र में किए गए प्रयासों से लाभ मिलेगा। किसी महत्वपूर्ण काम में आपको सफलता मिल सकती है।

बॉलीवुड | मन की बात

मैं चाहती हूं फिल्म इंडस्ट्री में बदलाव आये : दीपिका

दीपिका पादुकोण ने संदीप रेड्डी वांगा की फिल्म स्पिरिट में आठ घंटे काम करने की शर्त रखी। वह अपनी बेटी की परवरिश में अधिक समय देना चाहती थी। इस वजह से उन्हें फिल्म 'स्पिरिट' से हटा दिया गया। लेकिन दीपिका अब भी इस मुद्दे पर खुलकर बोल रही हैं। एक हालिया इंटरव्यू में उन्होंने 8 घंटे काम करने की शर्त को जायज बताया। साथ ही फिल्म इंडस्ट्री के वर्किंग कल्चर को लेकर भी सवाल उठाए। दीपिका बोलीं- हम बहुत डिसऑर्गेनाइज इंडस्ट्री हैं। दीपिका पादुकोण ने कहा, 'मैं इस बात को लेकर मुखर रही हूं कि इंडियन फिल्म इंडस्ट्री में बदलाव लेकर आऊं। क्योंकि यह बहुत ही क्रूर है। हमारी एक आदत है कि ये तो चलता है। लेकिन मैं उनमें से हूं, जो चाहती है कि चीजें बेहतर हों। अगर हम खुद को एक इंडस्ट्री कहते हैं लेकिन एक इंडस्ट्री की तरह काम नहीं करते हैं। हम बहुत डिसऑर्गेनाइज इंडस्ट्री हैं। अब समय आ गया है कि हम एक सिस्टम बनाए, एक बेहतर वर्किंग कल्चर बनाएं। इसी इंटरव्यू में दीपिका पादुकोण ने कहा कि वह किसी का नाम लेकर बखेड़ा नहीं करना चाहती हैं। लेकिन कई मेल एक्टर्स बॉलीवुड में हैं, जो कई साल से सिर्फ 8 घंटे ही काम करते हैं। यहां तक कि वीकएंड पर तो काम करते ही नहीं है। इन बातों को उठाकर दीपिका फीमेल एक्ट्रेस के लिए भी एक बेहतर वर्किंग कल्चर फिल्म इंडस्ट्री में बनाना चाहती हैं। बताते चलें कि दीपिका पादुकोण वर्ल्ड मेंटल हेल्थ डे के लिए मध्य प्रदेश गई थीं। वहां उन्होंने अपने फाउंडेशन लिव लव लाफ के 10 साल पूरे होने को सेलिब्रेट किया। एक्ट्रेस का यह फाउंडेशन देशभर में मेंटल हेल्थ को लेकर जागरूकता फैलाने में अहम रोल निभा रहा है। दीपिका की अपकमिंग फिल्म की बात करें तो वह शाहरुख की फिल्म 'किंग' कर रही हैं। इस एक्शन फिल्म में शाहरुख खान की बेटी सुहाना खान भी एक्टिंग कर रही हैं।

करवाचौथ पर प्रियंका चोपड़ा का अमेरिका में भी दिखा देसी अंदाज

प्रियंका चोपड़ा जोनस इन दिनों करवाचौथ की तैयारियों में जुटी हैं। अमेरिका में रहते हुए भी वह भारतीय परंपराओं को पूरे दिल से निभाती हैं। हर साल की ही तरह इस बार भी प्रियंका ने अपने पति निक जोनस के लिए करवाचौथ का व्रत रखने की तैयारियां शुरू कर दी हैं और इसके साथ ही सोशल मीडिया पर उनकी मेहंदी की तस्वीरें वायरल हो गई हैं। प्रियंका ने अपने इंस्टाग्राम पर अपनी मेहंदी की एक झलक दिखाई है। तस्वीरों में उनकी हथेलियों पर सजी बेहद खूबसूरत और मिनिमल डिजाइन की मेहंदी दिखाई दे रही है, जिसमें निक जोनस का पूरा नाम 'निकोलस' हिंदी में लिखा गया है।

प्रियंका ने पहले एक पॉडकास्ट इंटरव्यू में बताया था कि भले ही वह हिंदू परिवार से हैं और निक एक ईसाई पृष्ठभूमि से आते हैं, लेकिन दोनों की आध्यात्मिक सोच एक जैसी है। उन्होंने कहा था, धर्म सिर्फ ईश्वर तक पहुँचने का एक रास्ता है, हम दोनों उस ऊंची शक्ति में समान विश्वास रखते हैं। यही वजह है कि

निक के नाम की मेहंदी को किया फ्लॉन्ट

उनके रिश्ते में धर्म की जगह प्रेम और सम्मान ने जगह बनाई है। प्रियंका और निक की लव स्टोरी किसी फिल्मी कहानी से कम नहीं है। दोनों ने दिसंबर 2018 में जोधपुर के उम्मेद भवन पैलेस में हिंदू और क्रिश्चियन रीति-रिवाजों से शादी की थी। शादी के बाद से ही यह जोड़ी दुनिया के सबसे लोकप्रिय कपल्स में गिनी जाती है। साल 2022 में दोनों सरोगेसी के जरिए बेटी मालती के माता-पिता बने। प्रियंका अक्सर अपने सोशल मीडिया पर निक और मालती के साथ बिताए खुशनुमा पल साझा करती रहती हैं।

करियर और आने वाले प्रोजेक्ट्स

काम की बात करें तो प्रियंका इस समय निर्देशक एस.एस. राजामौली की अगली फिल्म की शूटिंग में बिजी हैं। यह फिल्म एक जंगल एडवेंचर ड्रामा बताई जा रही है, जिसमें महेश बाबू और पृथ्वीराज सुकुमारन भी नजर आएंगे। खबरों के मुताबिक, इस फिल्म का पहला पोस्टर नवंबर 2025 में रिलीज किया जाएगा।

21 नवंबर को सिनेमाघरों में रिलीज होगी रितेश देशमुख की फिल्म 'मस्ती 4'

रितेश देशमुख, विवेक ओबेरॉय और आफताब शिवदासानी की तिकड़ी मस्ती 4 के साथ बड़े पर्दे पर धमाल मचाने के लिए तैयार है। बीते दिनों इस फिल्म का टीजर रिलीज किया गया था, जिसे ऑडियंस ने काफी पसंद किया था। अब मेकर्स ने फिल्म का नया पोस्टर रिलीज किया है।

रिलीज किए गए इस पोस्टर में रितेश देशमुख, विवेक ओबेरॉय और आफताब शिवदासानी की तिकड़ी नजर आ रही है। पोस्ट में तीनों एक्टर पर कई लड़कियों के हाथ नजर आ रहे हैं। इसी के साथ इसमें फिल्म की रिलीज डेट भी दिखाई गई है।

वहीं इस पोस्ट को शेयर करते हुए मेकर्स ने कैप्शन में लिखा, रोज

रोज नई रोजी, जिनके साथ ये होते हैं कोजी! मस्ती से मस्ती 4 तक। नई कहानी, और अधिक पागलपन। फिल्म 21 नवंबर को सिनेमाघरों में रिलीज हो रही है। जानकारी के मुताबिक इस फिल्म की कहानी एक्ट्रा-मैरिटल अफेयर्स पर बेस्ड है। रिपोर्ट्स के मुताबिक इस फिल्म में कई नए सितारों की एंट्री हुई है। जिसमें अरशद वारसी, जेनेलिया डिसूजा, नरगिस फाखरी, तुषार कपूर, शाद रंधावा, एलनाज नौरोजी और रूही सिंह जैसे सितारे हैं। फिल्म की शूटिंग यूके में हुई है।

बता दें कि मस्ती 4, 2004 की फ्रेंचाइज मस्ती का चौथा सीक्वल है। साल 2013 में ग्रैंड मस्ती और 2016 में ग्रेट गैंड मस्ती रिलीज हुई थी। अब करीब 9 साल बाद मेकर्स मस्ती 4 के साथ लौट रहे हैं। देखना दिलचस्प होगा कि ये फिल्म बड़े पर्दे पर क्या कमाल दिखाती है। वहीं इस बार डायरेक्शन की जिम्मेदारी इंद्र कुमार ने नहीं बल्कि मिलाप जावेरी ने संभाली है।

अजब-गजब | यहां होता है भैंसों का ब्यूटी कॉन्टेस्ट

इस देश में भैंसों को दुल्हन की तरह सजाते हैं लोग, सबसे सुन्दर को मिलता है इनाम!

आपने अब तक महिलाओं और मर्दों के ब्यूटी कॉन्टेस्ट तो बहुत देखे होंगे, लेकिन क्या आपने कभी सोचा है कि 'भैंसों का भी ब्यूटी कॉन्टेस्ट' हो सकता है? जी हां, आज हम आपको एक ऐसे देश के बारे में बताने जा रहे हैं, जहां भैंसों की खूबसूरती मापने के लिए कॉन्टेस्ट आयोजित किया जाता है। इस ब्यूटी कॉन्टेस्ट को लेकर वहां के लोगों में बहुत उत्साह दिखता है। आइए जानते हैं, उस देश और इस मुकाबले के बारे में।

दरअसल, थाईलैंड के चोनबुरी में हर साल जल भैंस दौड़ उत्सव मनाया जाता है। यह त्यौहार थाईलैंड के फसल सीजन की शुरुआत और किसानों की मेहनत का प्रतीक माना जाता है। पहले भैंसें खेत जोतने और माल ढोने में काम आती थीं, लेकिन अब मशीनों ने उनकी जगह ले ली है। इसलिए, इन त्योहारों के जरिए अब उन्हें एक नया सम्मान और पहचान दी जा रही है। यहां भैंसों की रेस होती है, पारंपरिक डांस के साथ परेड निकलती है और लोग पारंपरिक थाई पोशाकों में सजकर इन

जानवरों का सम्मान करते हैं।

अब खेत नहीं, रैंप पर दिखती हैं भैंसें

इस मेले में सिर्फ रेस ही नहीं, बल्कि भैंसों का ब्यूटी कॉन्टेस्ट भी होता है। इस कॉन्टेस्ट के दौरान भैंसों को खास तौर पर सजाया जाता है। उनके सींगों पर फूल लगाए जाते हैं, शरीर पर तेल लगाया जाता है ताकि उनकी त्वचा चमके और उनकी चाल-ढाल और आकार का भी बारीकी से मूल्यांकन किया जा सके। जिन भैंसों की सींग सबसे सुंदर, शरीर सबसे मजबूत और चाल सबसे शाही होती है, उन्हें विजेता घोषित किया जाता है। कॉन्टेस्ट के दिन मैदानों में हजारों लोग पहुंचते हैं। बच्चे भैंसों के साथ फोटो खिंचवाते हैं, वहीं जज काउबॉय हैट पहनकर हर भैंस का निरीक्षण करते हैं।

बताया जाता है कि, थाईलैंड में कभी भैंसों की संख्या लगातार गिरती चली जा रही थी, लेकिन अब इन प्रतियोगिताओं ने किसानों में नई ऊर्जा भर दी है। 2017 में सरकार ने थाई बफेलो कंजर्वेशन डे की शुरुआत की, ताकि किसान इन जानवरों को पालने के लिए प्रेरित हों। अब सरकार नस्ल सुधार और प्रजनन सहायता भी देती है। कई बड़े फार्म अब इन भैंसों को रोज नहलाते हैं, खास डाइट देते हैं। जिसमें कॉर्न, सोयाबीन, ब्रान और विटामिन्स शामिल हैं। चोनबुरी का यह त्योहार सिर्फ एक मनोरंजन नहीं, बल्कि थाईलैंड की संस्कृति, इतिहास और किसान जीवन की एक झलक है। भले ही अब मशीनों ने खेत संभाल लिए हों, लेकिन इन भैंसों की चमक, ताकत और अपनापन आज भी लोगों के दिलों में बसती है।

भारत के इस प्रदेश में हर शादी से पहले होती है 'दूल्हा' की पूजा, रोचक है अनोखी परंपरा

छत्तीसगढ़ के आदिवासी बाहुल्य सरगुजा में पीढ़ियों से चली आ रही एक अनोखी परंपरा आज भी जीवित है। माझी समाज अपने आराध्य देव दूल्हा देवता की पूजा को अत्यंत श्रद्धा और विश्वास के साथ निभाता आ रहा है। समाज में चाहे शादी हो, त्यौहार हो या कोई शुभ कार्य हर शुरुआत दूल्हा देवता की आराधना से की जाती है। यह पूजा माझी समाज की आस्था, परंपरा और सामूहिक एकता का प्रतीक है, जिसे देखने और समझने के लिए अन्य समाज के लोग भी इनके आयोजन में शामिल होते हैं। दूल्हा देवता की पूजा माझी समाज की संस्कृति का अभिन्न हिस्सा है, जिसे धार्मिक अनुष्ठान के रूप में देखा जाता है। बंधन नाग ने कि समाज में शादी-विवाह या घर के किसी भी बड़े त्योहार के अवसर पर दूल्हा देव की पूजा की जाती है। जैसे नया खानी पर्व के समय सबसे पहले दूल्हा देव का पूजन किया जाता है। विवाह के समय भी घर में उनकी विशेष आराधना होती है। उन्होंने बताया कि शादी के दौरान एक परंपरा यह है कि लड़की के ससुराल वाले ही घर में प्रवेश कर सकते हैं, अन्य कोई व्यक्ति अंदर नहीं जाता। यह परंपरा आज भी समाज में पूरी श्रद्धा से निभाई जाती है। इसे देखने के लिए अन्य समाजों के लोग भी पहुंचते हैं और माझी समाज की पारंपरिक पूजा देखकर हैरान रह जाते हैं। अंदु राम माझी ने बताया कि मेरे समाज में चाहे व्यक्ति शादी करे या न करे, हर घर में दूल्हा देव की पूजा होती है। इस पूजा में दाल, चावल और पारंपरिक सामग्री चढ़ाई जाती है। माना जाता है कि इन नैवेद्यों से दूल्हा देव प्रसन्न होकर परिवार को सुख-समृद्धि का आशीर्वाद देते हैं। अंदु राम के अनुसार, यह पूजा मुख्य रूप से होली के बाद की जाती है। दूल्हा देव को समाज का आराध्य देव माना गया है और उनकी पूजा सरना पूजा के रूप में सम्पन्न होती है, इस समय सरना पूजा सम्पन्न हो चुकी है और अब नया खानी का पर्व मनाया जा रहा है। इसके बाद छेरता पर्व आएगा, जिसमें पुनः दूल्हा देव की पूजा की जाएगी। दूल्हा देव को प्रसन्न करने के लिए समाज के लोग पारंपरिक रूप से मुर्गी और बकरे की बलि भी अर्पित करते हैं। दूल्हा देव की पूजा माझी समाज की संस्कृति और आस्था का अभिन्न हिस्सा है। यह केवल धार्मिक अनुष्ठान नहीं, बल्कि समाज की एकजुटता, पारिवारिक संस्कृति और पूर्वजों की परंपरा के प्रति सम्मान का प्रतीक है। समय भले बदल गया हो, लेकिन माझी समाज की श्रद्धा और भक्ति आज भी पहले जैसी अटूट बनी हुई है।

चुनाव आयोग के अधिकारी दे रहे धमकी : ममता

बंगाल सीएम बोलीं- मतदाता सूची से छेड़छाड़ लोकतंत्र से विश्वासघात

» एसआईआर के बहाने वोट काटने की साजिश

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

कोलकाता। पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने चुनाव आयोग पर तीखा हमला बोलते हुए आरोप लगाया कि उसके अधिकारी विधानसभा चुनाव की तारीखों की घोषणा से पहले ही उनकी सरकार के अधिकारियों को धमका रहे हैं और राजनीतिक प्रभाव में काम कर रहे हैं। उन्होंने यह भी कहा कि भाजपा मतदाता सूची के विशेष गहन पुनरीक्षण (एसआईआर) के नाम पर आग से खेल रही है और चेतावनी दी कि मतदाता सूची से छेड़छाड़ का कोई भी प्रयास लोकतंत्र के साथ विश्वासघात के समान होगा। टीएमसी सुप्रीमो ने राज्य सचिवालय नबन्ना में कहा कि चुनाव आयोग बंगाल सरकार के अधिकारियों को धमका रहा है। हम इसे बर्दाश्त नहीं करेंगे।

राज्य का दौरा करने वाले चुनाव आयोग के अधिकारियों के आचरण पर सवाल उठाते हुए, बनर्जी ने आश्चर्य जताया कि चुनाव कार्यक्रम घोषित होने से पहले वे राज्य सरकार के अधिकारियों को कैसे बुला सकते हैं। राज्य में अगले साल विधानसभा चुनाव होने हैं। उन्होंने कहा कि बंगाल में चुनाव की तारीखों की घोषणा अभी बाकी है; चुनाव आयोग के अधिकारी राज्य का दौरा करके सरकारी अधिकारियों को कैसे बुला सकते हैं? पश्चिम बंगाल के मुख्य चुनाव अधिकारी मनोज अग्रवाल का स्पष्ट रूप से जिक्र करते हुए, बनर्जी ने दावा किया कि राज्य में एसआईआर प्रक्रिया की देखरेख कर रहे एक चुनाव आयोग अधिकारी पर खुद कई आरोप हैं और वह भ्रष्ट अधिकारियों की नियुक्ति कर रहे हैं। उन्होंने दावा किया कि उन पर खुद भ्रष्टाचार का आरोप है और एसआईआर के बहाने वोट काटने की साजिश चल रही है, मेरे पास सबूत हैं। उन्होंने आगे कहा, मुझे उम्मीद है कि वह देश और लोकतंत्र के साथ विश्वासघात नहीं करेंगे। मुख्यमंत्री ने आरोप लगाया कि यह एसआईआर प्रक्रिया वैसी नहीं है जैसी दिखती है। इसका इस्तेमाल बंगाल में एनआरसी(राष्ट्रीय नागरिक रजिस्टर) जैसी कवायद को अंजाम देने के लिए किया जा रहा है।

भर्ती घोटाले में बढ़ी टीएमसी की मुश्किलें

प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) तृणमूल कांग्रेस नेता और बंगाल के मंत्री सुजीत बोस के कोलकाता स्थित साल्ट लेक कार्यालय और दक्षिण दंडम नगर पालिका के उपाध्यक्ष निताई दता के आवास पर छापेमारी कर रहा है। ये छापेमारी एक कथित नगर निकाय भर्ती घोटाले के सिलसिले में हो रही है। यह मामला लगभग 240 से 250 लोगों की कथित तौर पर बेईमानी स भर्ती से जुड़ा है। रिपोर्ट के अनुसार, सुजीत बोस 2010 से 2021 तक दक्षिण भारतीय सरकार के उपाध्यक्ष थे। ईडी ने कथित तौर पर दूसरी बार इस जांच के सिलसिले में मंत्री के कार्यालय पर छापा मारा है। तृणमूल कांग्रेस ने अभी तक इन नवीनतम छापों पर आधिकारिक रूप से कोई प्रतिक्रिया नहीं दी है, जिनके बंगाल में महत्वपूर्ण राजनीतिक प्रभाव पड़ने की आशंका है। ईडी के अधिकारी ने बताया, आज की छापेमारी का उद्देश्य भ्रष्टाचार से जुड़े दस्तावेजों को इकट्ठा करना है। मंत्री का कार्यालय मूल रूप से हमारी सूची में नहीं था। केंद्रीय एजेंसी ने इसी मामले में इससे पहले जनवरी 2024 में बोस के आवास पर छापा मारा था और उनसे 12 घंटे से अधिक समय तक पूछताछ की थी। आज की छापेमारी का उद्देश्य भ्रष्टाचार से जुड़े दस्तावेज़ एकत्र करना है। मंत्री का कार्यालय मूल रूप से हमारी सूची में नहीं था। इससे संकेत मिलता है कि बोस की संपत्ति को इस अभियान में बाद में शामिल किया गया था।

अदालत कक्ष में हमले की घटना से स्तब्ध : गवई

» सीजेआई बोले- लेकिन अब यह विस्मृत अध्याय

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। भारत के प्रधान न्यायाधीश (सीजेआई) बी आर गवई ने कहा कि वह और न्यायमूर्ति के विनोद चंद्रन उस समय स्तब्ध रह गए थे जब छह अक्टूबर को एक वकील ने उन पर जूता फेंकने का प्रयास किया था, लेकिन अब यह मुद्दा एक ''विस्मृत अध्याय'' है। यह घटना सोमवार को उस समय हुई थी, जब प्रधान न्यायाधीश के नेतृत्व वाली पीठ वकीलों द्वारा उल्लेख किए गए मामलों की सुनवाई कर रही थी। आरोपी 71 वर्षीय वकील राकेश किशोर ने अपना जूता निकाला और उसे न्यायाधीशों की ओर उछालने का प्रयास किया। इस कृत्य की चौतरफा निंदा हुई थी।

प्रधान न्यायाधीश ने वनशक्ति मामले में फैसले की समीक्षा और संशोधन का अनुरोध करने संबंधी याचिकाओं की सुनवाई के दौरान यह टिप्पणी की। प्रधान न्यायाधीश ने जूता फेंकने के प्रयास की घटना पर कहा, ''सोमवार को जो कुछ हुआ उससे मैं और मेरे विद्वान साथी (न्यायमूर्ति चंद्रन) बहुत स्तब्ध हैं, हमारे लिए यह एक विस्मृत अध्याय है। पीठ में शामिल न्यायमूर्ति उज्ज्वल भुइयां ने दोषी वकील के खिलाफ की गई कार्रवाई से असहमति जताई और कहा, इस पर मेरे अपने विचार हैं, वह प्रधान न्यायाधीश हैं, यह मजाक की बात नहीं है! न्यायमूर्ति भुइयां ने कहा कि यह घटना ''उच्चतम न्यायालय का अपमान'' है और इस संबंध में उचित कार्रवाई की जानी चाहिए। सॉलिसिटर जनरल तुषार मेहता ने इस कृत्य को अक्षम्य बताया। शीर्ष विधि अधिकारी ने प्रधान न्यायाधीश की उदारता और ''महानता'' की सराहना की। अदालत में मौजूद वरिष्ठ अधिवक्ता कपिल सिब्बल ने वरिष्ठ वकील गोपाल शंकरनारायणन से सुनवाई को आगे बढ़ाने तथा इस चौंकाने वाले प्रकरण पर आगे चर्चा न करने को कहा। प्रधान न्यायाधीश ने दोहराया, हमारे लिए यह एक विस्मृत अध्याय है। इसके बाद पीठ मामले की सुनवाई करने लगी।

दक्षिण अफ्रीका ने रोका भारत का विजय रथ

» लाउरा-क्लार्क के अर्धशतक के चलते तीन विकेट से जीता अफ्रीका मैच

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

विशाखापत्तनम। दक्षिण अफ्रीका ने भारत को तीन विकेट हरा दिया। गुरुवार को महिला विश्व कप का रोमांचक मुकाबला विशाखापत्तनम में खेला गया जिसमें भारतीय महिला टीम ने पहले बल्लेबाजी करते हुए ऋचा घोष की 94 रनों की पारी की बदौलत 49.5 ओवर में 10 विकेट पर 251 रन बनाए। जवाब में दक्षिण अफ्रीका ने 48.5 ओवर में सात विकेट खोकर 252 रन बनाए और मुकाबला अपने नाम कर लिया। उनके लिए कप्तान लाउरा वोलवार्ड्ट ने 70 और नादिन डी क्लार्क ने नाबाद 84 रन बनाए।

भारत के लिए क्रांति गौड़ और स्नेह राणा ने दो-दो विकेट लिए जबकि अमनजोत कौर, श्री चरणी और दीप्ति शर्मा ने एक-एक विकेट झटके। इस शिकस्त के साथ भारतीय महिला टीम का विजय रथ थम गया। हरमनप्रीत कौर के नेतृत्व वाली टीम ने श्रीलंका को 59 रन और पाकिस्तान को 88 रन से हराया था। इस जीत के साथ दक्षिण अफ्रीका की टीम चार अंक और -0.888 के नेट रन रेट के साथ चौथे स्थान पर काबिज है। वहीं, भारतीय महिला टीम तीन में से दो जीत और एक हार के साथ तालिका में तीसरे स्थान पर बनी हुई है। उसके खाते में भी चार अंक हैं और नेट रन रेट +0.959 है। शीर्ष दो स्थानों पर क्रमश: ऑस्ट्रेलिया और इंग्लैंड की टीमें हैं। भारतीय टीम की पारी की रीढ़ बनीं युवा विकेटकीपर-बल्लेबाज ऋचा घोष, जिन्होंने मुश्किल हालात में शानदार 94 रन (77 गेंद, 11 चौके, 4 छक्के) की पारी खेली। शुरुआत भारत के लिए अच्छी रही थी। प्रतीका रावल (37) और स्मृति मंधाना (23) ने पहले विकेट के लिए 10.2 ओवर में 55 रन जोड़े। लेकिन इसके बाद भारतीय शीर्ष क्रम लड़खड़ा गया।

ऋचा की मेहनत पर फिरा पानी

मंधाना एक कैलेंडर वर्ष में सर्वाधिक रन बनाने वाली बनीं खिलाड़ी

विशाखापत्तनम। दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ खेले जा रहे महिला विश्व कप के मुकाबले में भारतीय टीम की उपकप्तान स्मृति मंधाना ने बड़ी उपलब्धि हासिल कर ली। वह एक कैलेंडर वर्ष में वनडे में सर्वाधिक रन बनाने वाली महिला खिलाड़ी बन गईं। उनके नाम अब 982* रन दर्ज हो गए हैं। मंधाना ने इस मैच में 32 गेंदों का सामना किया और 23 रन बनाकर पवेलियन लौटीं। इसी के साथ वह एक कैलेंडर वर्ष में वनडे में सर्वाधिक रन बनाने वाली बल्लेबाज बन गईं। इस मामले में उन्होंने ऑस्ट्रेलिया की बेलिंडा क्लार्क को पीछे छोड़ दिया, जिन्होंने 1997 में एक कैलेंडर वर्ष में 970 रन बनाए थे। तीसरे स्थान पर दक्षिण अफ्रीका की लाउरा वोलवार्ड्ट (882 रन, 2022) हैं। चौथे और पांचवें स्थान पर क्रमशः न्यूजीलैंड की डीब्बी हॉक्ले (880 रन, 1997) और एमी सैटरथ्वेट (853 रन, 2016) मौजूद हैं।

केरल केंद्रीय वन्यजीव कानून में संशोधन करने वाला पहला राज्य : सीएम विजयन

» बोले- मानव-पशु संघर्ष की बढ़ती घटनाओं को कम करने के उद्देश्य से विधेयक किया पारित

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

कोच्चि। केरल के मुख्यमंत्री पिनराई विजयन ने कहा है कि केरल केंद्रीय वन्यजीव संरक्षण अधिनियम, 1972 में संशोधन करने संबंधी विधेयक पारित करने वाला पहला राज्य बन गया है। केरल ने राज्य में मानव-पशु संघर्ष की बढ़ती घटनाओं को कम करने के उद्देश्य से एक विधेयक पारित किया।

मुख्यमंत्री ने कहा कि केरल वन्यजीव संरक्षण संशोधन विधेयक का पारित होना बढ़ते मानव-पशु संघर्षों को दूर करने और वन के पास रहने वाले समुदायों के लिए न्याय सुनिश्चित करने की दिशा में एक बड़ा कदम है। उन्होंने कहा, ये सुधार मानव जीवन एवं वन्यजीवों की सुरक्षा और लोगों एवं प्रकृति के बीच सामंजस्य को बढ़ावा देने की केरल की प्रतिबद्धता की पुष्टि करते हैं।

नगर निगम के अधिकारियों और बाबुओं की करतूत

» मकान मालिक की जगह चढ़ा दिया किसी और का नाम

» आईजीआरएस पर शिकायत के बाद भी नहीं हटा नाम

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। नगर निगम के अधिकारियों और बाबुओं की मिलीभगत से मकान का असली मालिक दर-दर भटकने को मजबूर है। धांधली करके मकान किसी और के नाम कर दिया। जब पीड़ित ने शिकायत की तो उसे आश्वासन की चटनी चटा कर टहलाने में लग गए। पीड़ित रितेश त्रिवेदी की नानी का मकान जो कि उनकी माता जी स्वर्गीय पूनम त्रिवेदी के नाम था। दो मकान हैं एक प्रियदर्शिनी कॉलोनी सीतापुर रोड और एक त्रिवेणी नगर में है। बिना किसी अन्य की जानकारी में आए रातों रात दोनों मकान नगर निगम ने म्यूटेशन करके संगीता अवस्थी के नाम कर दिए।

जब जीव ही शिव के नाम से मिशन चलाने वाले रितेश जो कि सामाजिक कार्यकर्ता है सभासद और उच्च अधिकारियों और आईजीआरएस पर शिकायत की तो पहले तो उन्हें आश्वाशन और टाला गया। बाद में कार्यवाही करने पर मेयर और समाधान दिवस में पूछने पर अधिकारियों की नींद टूटी उन्होंने सबूत दिए कि कैसे ये मकान संगीता अवस्थी ने अपने नाम कराया अपने आप को अकेला जीवित वारिस साबित कर सबका हक छीना। अभी भी नगर निगम ने कागजों पर इनका नाम नहीं हटाया और रितेश का नाम नहीं आया है। इसके पहले भी तमाम जगह बाबू से साठ गांठ करके लोग मालिक का ही नाम हटा देते है। रितेश ने साफ कहा है इंसाफ में देरी भले हो पर इंसाफ के लिए लड़ेंगे और दोषी को सजा दिला के रहेंगे। जब एक सामाजिक कार्यकर्ता का ये हाल है तो आम आदमी कहां जाएगा। सीएम योगी और मेयर साहिबा से निवेदन है कि तत्काल कार्यवाही कर इनका नाम हटा के असल मालिक के नाम दर्ज करे।

कई मुकदमें दर्ज हैं संगीता अवस्थी पर

तमाम गैर कानूनी कार्यों में लिप्त महिला है इनके खिलाफ तमाम मुकदमे है तमाम जगह कब्जा करके जमीन की मालिक है। पीड़ित ने सीसीटीवी की फुटेज से उक्त महिला की करतूत भी दिखाई। उसमे साफ दिख रहा कैसे ये घर में घुसी। तब पुलिस ने रितेशको मकान की चाभी सौंपी।

दलित आईपीएस की आत्महत्या पर नहीं थम रही रार

» कांग्रेस व आप ने भाजपा सरकार को घेरा

» केजरीवाल का बड़ा सवाल, क्या जातिगत उत्पीड़न है जिम्मेदार

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

चंडीगढ़। दलित आईपीएस अधिकारी पूरन कुमार की जातिगत उत्पीड़न के कारण हुई कथित आत्महत्या का मामला शांत नहीं हो रहा है। कांग्रेस, आप समेत सभी विपक्षी दलों ने भाजपा की सैनी सरकार पर सवाल उठा उठा दिए है। हालांकि सरकार कु छ अधिकारियों पर कार्रवाई की है।

अरविंद केजरीवाल ने हरियाणा के दलित आईपीएस अधिकारी पूरन कुमार की जातिगत उत्पीड़न के कारण हुई कथित आत्महत्या पर दुख व्यक्त करते हुए दोषियों के लिए कड़ी सजा की मांग की है। अधिकारी की पत्नी की शिकायत पर डीजीपी शत्रुजीत सिंह कपूर और एसपी नरेंद्र बिजारनिया के खिलाफ एफआईआर दर्ज हुई है, जिसमें जाति-आधारित भेदभाव और व्यवस्थित उत्पीड़न का आरोप है। यह घटना देश में दलितों के साथ हो रहे उत्पीड़न के गंभीर मुद्दे को पुन: उजागर करती है।

दोषियों को जल्द से जल्द कड़ी से कड़ी सज़ा मिलनी चाहिए : अरविंद केजरीवाल

आम आदमी पार्टी (आप) प्रमुख अरविंद केजरीवाल ने शुक्र वार को हरियाणा के दलित आईपीएस अधिकारी वाई पूरन कुमार की कथित आत्महत्या पर गहरा दुख व्यक्त किया और कहा कि जातिगत उत्पीड़न के कारण अधिकारी ने आत्महत्या कर ली। उन्होंने दोषियों के लिए कड़ी सज़ा की भी माँग की। एक्स पर साझा की गई एक पोस्ट में, केजरीवाल ने कहा, हरियाणा के दलित आईपीएस अधिकारी पूरन कुमार जी को अपनी जाति के कारण इतना उत्पीड़न सहना पड़ा कि उन्होंने आत्महत्या कर ली। उन्होंने आगे कहा कि दोषियों को जल्द से जल्द कड़ी से कड़ी सज़ा मिलनी चाहिए। केजरीवाल ने हाल ही में भारत के मुख्य न्यायाधीश बीआर गवई पर जूता फेंकने की घटना की भी निंदा की। उन्होंने एक्स पर एक पोस्ट में पूछा, जब देश के मुख्य न्यायाधीश पर जूता फेंका गया, तो सोशल मीडिया पर उनके ट्रोल दलितों का अपमान कर रहे हैं, यहाँ तक कि बाबा साहेब अंबेडकर को भी गालियाँ दे रहे हैं। ये लोग आज भारत को कहाँ ले आए हैं?

डीजीपी और रोहतक एसपी समेत 10 से अधिक अफसरों पर एफआईआर

हरियाणा के 2001 बैच के एडीजीपी रैंक के आईपीएस अधिकारी वाई पूरण कुमार की आत्महत्या मामले में चंडीगढ़ पुलिस ने वीरवार रात डीजीपी शत्रुजीत कपूर समेत 10 से अधिक अधिकारियों के खिलाफ केस दर्ज कर लिया। सेक्टर 11 थाने में घटना के तीसरे दिन सुसाइड नोट के आधार पर धारा 108 आरडब्ल्यू 3(5) बीएनएस और 3(1)(आर) पीओए (एससी/एसटी) अधिनियम के अंतर्गत एफआईआर दर्ज की गई। पूरण कुमार ने अपने सुसाइड नोट में डीजीपी शत्रुजीत कपूर, रोहतक के एसपी नरेंद्र बिजारणिया समेत 10 से अधिक अधिकारियों पर उत्पीड़न, जातिगत प्रताड़ना और सार्वजनिक अपमान के आरोप लगाए थे।

कांग्रेस प्रदेश अध्यक्ष राव नरेंद्र ने सरकार को ठहराया जिम्मेदार

हरियाणा के आईपीएस अधिकारी वाई. पूरण कुमार के सुसाइड नोट में वरिष्ठ अधिकारियों पर जातिगत प्रताड़ना के आरोपों को लेकर कांग्रेस प्रदेश अध्यक्ष राव नरेंद्र सिंह ने प्रदेश और केंद्र सरकार पर तीखा हमला बोला है। उन्होंने इसे लोकतंत्र के लिए शर्मनाक और लोकतंत्र की हत्या करार दिया। राव ने कहा कि इस मामले को वरिष्ठ अधिकारियों और मुख्यमंत्री को समय रहते सुलझाना चाहिए था, ताकि एक काबिल अधिकारी को आत्महत्या जैसा कदम न उठाना पड़े। कांग्रेस इस मुद्दे को गंभीरता से ले रही है और विचार-विमर्श के बाद आगे की कार्रवाई करेगी। उन्होंने हरियाणा में कानून-व्यवस्था की स्थिति पर भी सवाल

उठाए, इसे बेहद खराब बताया। इसके साथ ही मुख्यमंत्री के जापान दौरे पर तंज कसते हुए कहा कि 11 साल में कोई निवेश नहीं आया, उल्ट हरियाणा से उद्योग गुजरात जैसे राज्यों में पलायन कर रहे हैं। उन्होंने सरकार को 10 में से शून्य अंक दिया। हरियाणा सरकार का एक साल पूरे होने पर राव ने कहा कि सरकार के पास कोई उपलब्धि नहीं है। वोट चोरी कर सत्ता में आई सरकार जनता के भरोसे के लायक नहीं है। बिहार विधानसभा चुनाव पर टिप्पणी करते हुए उन्होंने कहा कि वहां संस्थाएँ काम नहीं कर रही हैं और लोग समझ चुके हैं कि उनके वोट चोरी हो रहे हैं। राव ने अनुमान लगाया कि बिहार में महागठबंधन पूर्ण बहुमत के साथ सरकार बनाएगा।

जूते वाली हरकत पर भड़के अठावले

» बोले केंद्रीय मंत्री- सीजेआई गवई दलित समुदाय से हैं, यह उच्च जाति वाले पचा नहीं पा रहे

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। केंद्रीय सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता राज्य मंत्री रामदास अठावले ने कहा कि भारत के मुख्य न्यायाधीश बी आर गवई को सोमवार को सुप्रीम कोर्ट की कार्यवाही के दौरान जूते से निशाना बनाया गया, क्योंकि वह दलित हैं। उन्होंने मांग की कि इस कृत्य के पीछे जो वकील था, उसके खिलाफ एससी/एसटी (अत्याचार निवारण) अधिनियम के तहत मामला दर्ज किया जाना चाहिए। पणजी में एक प्रेस कॉन्फ्रेंस में बोलते हुए, अठावले ने कहा भारत के मुख्य न्यायाधीश पर इस तरह का हमला पहली बार हुआ है।

माननीय भूषण गवई दलित समुदाय से हैं और उनके पिता केरल और बिहार के राज्यपाल थे। लेकिन उन्होंने पढ़ाई की, और अपने प्रयासों के परिणामस्वरूप वे बॉम्बे हाईकोर्ट और बाद में सुप्रीम कोर्ट तक पहुँचे और उन्हें मुख्य न्यायाधीश बनने का अवसर मिला... सवर्ण समाज (उच्च जाति) के कई लोगों को यह पसंद नहीं आया। इसलिए, उन्होंने उन पर हमला किया है। अठावले ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी उन लोगों में शामिल थे जिन्होंने इस घटना की आलोचना की और मुख्य न्यायाधीश से बात करके इसकी निंदा की। उन्होंने आगे कहा कि मेरी माँग है कि आरोपियों पर (एससी/एसटी) अत्याचार अधिनियम के तहत मामला दर्ज किया जाए। दलित नेता अठावले की यह टिप्पणी इस घटना को लेकर भाजपा को घेरने की विपक्ष की कोशिश को बल दे सकती है, क्योंकि मुख्य न्यायाधीश पर हमले के पीछे के वकील राकेश किशोर ने दावा किया है कि वे सनातन धर्म के नाम पर ऐसा कर रहे हैं। घटना के बाद किशोर को हिरासत में तो लिया गया था, लेकिन जस्टिस गवई के यह कहने पर कि वह आरोप नहीं लगाना चाहता, उसे छोड़ दिया गया। किशोर ने मीडिया से कहा कि उसे अपने किए पर कोई पछतावा नहीं है, लेकिन कई लोगों ने उसके खिलाफ कोई कानूनी कार्रवाई न होने पर सवाल उठाए हैं।

कोल्ड्रिफ सीरप मामले की याचिका सुप्रीम कोर्ट ने खारिज की

» बच्चों की मौत के मामले की जांच नहीं करेगी सीबीआई

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। मध्य प्रदेश और राजस्थान में जहरीली कोल्ड्रिफ कफ सीरप के सेवन से कई बच्चों की मौत हो गई। सीरप से हुई मौत का मामला सुप्रीम कोर्ट पहुंच गया है। शीर्ष न्यायालय में एक पीआईएल दायर कर इस मामले की जांच सीबीआई से करने की मांग की गई थी। हालांकि, सुप्रीम कोर्ट ने इस याचिका को सुनने से इनकार कर दिया।

बता दें कि गुरुवार को सुप्रीम कोर्ट सीरप से हुई बच्चों की मौत के मामले में दायर याचिका पर सुनवाई करने को सहमत हो गया। इस याचिका में कई बातों का उल्लेख किया गया था; इसी याचिका में इस मामले की जांच सीबीआई से कराने की मांग की गई थी, हालांकि, सुप्रीम कोर्ट ने इससे इनकार कर दिया है।

वैशाली में पैसे बांटने पर बवाल

फुटेज ने बढ़ाई पप्पू यादव की मुश्किलें, आचार संहिता उल्लंघन का केस

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

पटना। बिहार के सांसद पप्पू यादव के खिलाफ वैशाली जिले में बाढ़ प्रभावित लोगों के बीच पैसे बांटने के बाद आदर्श आचार संहिता का कथित उल्लंघन करने का मामला दर्ज किया गया है। अधिकारियों ने बताया कि जिला प्रशासन की शिकायत के आधार पर पूर्णिया से निर्दलीय सांसद यादव के खिलाफ गुरुवार रात सहदेई पुलिस थाने में मामला दर्ज किया गया।

एसपी ललित मोहन शर्मा ने कहा कि सीसीटीवी फुटेज और चुनाव ड्यूटी पर तैनात एक अधिकारी के बयान के आधार पर मामला दर्ज किया गया है। राज्य में विधानसभा चुनाव के लिए मतदान 6 और 11 नवंबर को होंगे, जबकि मतों की गिनती 14 नवंबर को होगी। चुनाव आयोग द्वारा चुनाव की तारीखों की घोषणा के साथ ही आदर्श आचार संहिता लागू हो जाती है।

मानवता के नाते मदद : पप्पू यादव

इस कार्रवाई पर प्रतिक्रिया देते हुए पप्पू यादव ने अपनी मंशा साफ की। उन्होंने कहा कि उनका उद्देश्य किसी को प्रभावित करना या कोई नियम तोड़ना नहीं था, बल्कि उन्होंने मानवता के नाते यह मदद की है। उन्होंने तर्क दिया कि जब लोग अपने घरों से बेघर हो रहे हैं, तो एक नेता का कर्तव्य है कि वह उनके साथ खड़ा रहे।

मोदी की ट्रंप की तारीफ पर भड़की कांग्रेस

जयराम रमेश का तंज: ट्रंप ने ऑपरेशन सिंदूर रोककर पूरा किया अर्धशतक

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। कांग्रेस सांसद और पार्टी के संचार प्रभारी महासचिव जयराम रमेश ने शुक्रवार को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी पर राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप की प्रशंसा करने के लिए तीखा कटाक्ष किया, जबकि अमेरिकी राष्ट्रपति ने यह दावा करते हुए अर्धशतक पूरा कर लिया कि उन्होंने ऑपरेशन सिंदूर को रोकने के लिए व्यापार और टैरिफ को ब्रह्मास्त्र के रूप में इस्तेमाल किया और पहलगाम हमले के बाद भारत और पाकिस्तान के बीच शत्रुता को समाप्त करने में मदद की।

कांग्रेस नेता ने ज़ोर देकर कहा कि राष्ट्रपति ट्रंप लगातार, आग्रही और दृढ़ रहे हैं और उन्हें शतक बनाने में ज़्यादा समय नहीं लगेगा। पार्टी नेता ने एक्स पर कहा कि राष्ट्रपति ट्रंप ने फिनलैंड के राष्ट्रपति अलेक्जेंडर स्टब के साथ अपनी मुलाकात के दौरान, व्यापार और टैरिफ को अपना ब्रह्मास्त्र बनाकर ऑपरेशन सिंदूर रोकने के अपने दावे का अर्धशतक पूरा कर लिया। इस मामले में, राष्ट्रपति ट्रंप लगातार, आग्रही और दृढ़ रहे हैं। और उन्हें शतक बनाने में ज़्यादा समय नहीं लगेगा।

गाजा में नरसंहार करने वाले नेतन्याहू की निंदा नहीं की

ट्रंप की प्रशंसा और सराहना के लिए प्रधानमंत्री मोदी पर निशाना साधते हुए, कांग्रेस नेता ने गाजा में नरसंहार की निंदा न करने और इज़राइली प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू से बात न करने पर भी परोक्ष रूप से तंज कसा। कांग्रेस नेता ने पोस्ट में कहा कि प्रधानमंत्री मोदी ने कल पूरा दिन ब्रिटेन के प्रधानमंत्री कीर स्टारमर से बात करने और राष्ट्रपति ट्रंप की प्रशंसा और सराहना के संदेश भेजने में बिताया। बेशक, वह इस दौरान उस व्यक्ति से बात करना नहीं भूले जिसने गाजा में नरसंहार किया था, इज़राइली प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू भी। इससे पहले 9 अक्टूबर को, कांग्रेस सांसद ने कहा था कि गाजा शांति योजना के पहले चरण पर समझौते के बाद प्रधानमंत्री मोदी द्वारा इज़राइली प्रधानमंत्री की बिना शर्त प्रशंसा चौंकाने वाली, शर्मनाक और नैतिक रूप से निंदनीय है।

स्वामी 4 पीएम न्यूज नेटवर्क्स प्राइवेट लिमिटेड के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक संजय शर्मा द्वारा आस्था प्रिंटर्स, 5/600, विकास खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ-226010 (यूपी) से मुद्रित एवं 5/600, विकास खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ-226010 (यूपी) से प्रकाशित। महाराष्ट्र कार्यालय :- 2 जी, कृष्णा कुटीर सागरिका CHS जुहू तारा रोड जुहू- मुंबई- 400049। संपादक - संजय शर्मा, विधि सलाहकार: सत्यप्रकाश श्रीवास्तव, मोहम्मद हैदर, वित्तीय सलाहकार: संदीप बंसल, कार्टूनिस्ट: हसन जैदी, दूरभाष: 0522- 4078371 | Email: daily4pm@gmail.com | website: www.4pm.co.in | RNI-UPHIN/2015/62233 डाक पंजी. सं- SSP/LW/NP-495/2018-2020 *इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी। समस्त विवाद लखनऊ न्यायालय के अधीन ही होंगे।